# तोरा संगे जयबौ रे कुजबा

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा






मैथिली अकादमी, पटना

मैथिली अकादमी प्रकाशन : १४७

प्रकाशक :
मैथिली अकादमी,
४/बी, श्रीकृष्णपुरी,
पटना : ८०००0१



पहिल संस्करण : १९८७
प्रति : एगारह सय

मूल्य : सजिल्द : [redacted] टाका
अजिल्द : [redacted] टाका



मुद्रक :
मुरलीधर प्रेस,
मुसल्लहपुर, पटना-६

# प्रस्ताविकी

आधुनिक मैथिली कथा साहित्य बहुत लोकप्रिय बनि गेल अछि। आजुक संघर्षशील युगमे थोड़ समयमे साहित्यक रसास्वादन करबाक ई सभसँ उपयुक्त विधा सिद्ध भए रहल अछि। तँए अकादमी बहुआयामी कथा-संग्रहक प्रकाशनक प्रति बहुत सचेष्ट आ सक्रिय अछि। एही क्रममे प्रस्तुत अछि मैथिलीक नवोदित कलाकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क एक अमूल्य भेंट : 'तोरा संगे जयबौ रे कुजबा'। हिनकामे अपन आंचलिकताक समग्र सौरभ अछि। नेपालमे मैथिलीक लेखन ओ नवनिर्माणमे जे सक्रिय कार्यक्रम होइत रहल अछि, ताहिमे 'भ्रमर' जी अग्रणी छथि। मिथिलाञ्चलक बहुत पैघ भाग नेपालमे पड़ैत अछि। तँए आधुनिक मैथिली साहित्यके नेपालक माटिपानिक जे जीवित सन्दर्भ अछि ताहिसँ जोड़ल रहब आवश्यक थीक। हिनक प्रस्तुत संकलनमे कथाक बहुविध आयाम, दिशा ओ दृष्टि उजागर भेल अछि। आशा अछि, मैथिलीक प्रेमी-पाठक एकर स्वागत करताह।

कार्तिकधवला त्रयोदशी
३-११-८७

अध्यक्ष

# प्रकाशिकी

"तोरा संगे जयबौ रे कुजबा" श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' लिखित एक चुनल कथा-संग्रह थिक। एहिमे समकालिक परिवेशमे जनसामान्यक व्यथा-कथा ओ खटमीठ अनुभवक बड़ा हृदयग्राही चित्रण भेल अछि। आजुक भोगल यथार्थ जटिल मनोग्रन्थि, भफाइत जिनगी आ उधियाइत मोन, टुटैत जीवन-मूल्य आ भसियाइत लोक एवं व्यक्तिक घुटन, परिवारक टुटन आ समाजक भाग-दौड़क एहि संकलनमे सजीव परिदृश्य अछि। अत्यन्त सहज ओ संवेदनशील शैलीमे मानव-मनोभावक विराट चित्राधार तैयार कयल गेल अछि। जिनगीक विशाल अनुभवक तानी-भरनीसँ कथाक इन्द्रधनुषी हार सजाओल गेल अछि। विद्वान कथाकारक दृष्टि सूक्ष्मातिसूक्ष्म आ सत्यान्वेषी छनि। माटिपानिक जीवित परिवेश, क्षणिकसँ क्षणिक दृश्यक सघन मानसिक ऊहापोह ओ आवेग-संवेगमय गहनानुभूतिक उन्मेषमे लेखक बेस प्रभावी छथि। शिल्प ओ कथ्यक अनुरूप यथोचित पृष्ठभूमिक निर्माणमे, कौतूहलक सृजनमे, सम-विषम पात्रसृष्टि द्वारा कथ्यक प्रभावकारितामे ओ जेहन चरित्र तेहने भाषा देबामे लेखक सिद्धहस्त छथि। अपन संग्रहेक एक पसिन्नगर कथाक आधारपर एकर शीर्षक गढ़ल गेल अछि। उपेक्षित-दलितवर्गक व्यथा-कथा, सहजानुभूति ओ देशकालक चित्रणमे ई बेजोड़ छथि। आर्थिक विषमता, सामाजिक विसंगति, मनोवैज्ञानिक संघर्ष, यौन-कुण्ठा आ वर्जनाक कारण समाजक बदलैत परिवेशक एत' तलस्पर्शी चित्र अछि। 'भ्रमर'जीक कथामे लोकमञ्चक बहुत रास सामग्री भरल अछि।

आजुक विज्ञानक भागदौड़क युगमे कथा अभिव्यक्तिक सर्वोच्च माध्यम सिद्ध भ' रहल अछि। एकर लोकप्रियता दिनानुदिन बढ़ि रहल छैक। थोड़ समयमे मार्मिकताक झाँकी अन्यत्र कत' भेटत ? नारीक नोराइत आँखि देखबाक हो वा ढुआयल आँचर, पुरुषक जटिलतम मनोग्रन्थि देखबाक हो वा ओकर संघर्षक अन्हड़-बिहाड़ि सर्वहाराक आक्रोश देखबाक हो वा शासनतन्त्रक निरंकुशता, सेक्सक बेचैनी देखबाक हो वा अर्थक परेशानी, नग्न यथार्थ अथवा मखमली आदर्शमे भ्रमण

करबाक हो एवं जनवादक भूत देखबाक हो वा समाजवादक देवता—सभ एक्के ठाम आधुनिक मैथिली कथा साहित्यमे मालाबद्ध भेटत। लोकजीवनक आ ग्रामीण परिवेशसँ चुनल एहने एक नैसर्गिक सुषमा-सौरभसँ सम्पन्न रंग-विरंगी फूलक हार थिक "**तोरा संगे जयबौ रे कुजबा**" जे सामाजिक वर्जनाक सभ आरि-धुरकें तोड़ि ठोस मानववादी धरातल गढ़बाक हेल अपस्याँत अछि। आशा अछि सहृदय पाठकके अपन पड़ोसीक माटि-पानिक ई अमूल्य रंग-टीप बेस जुड़ओतनि। मुद्रणगत त्रुटिक लेल क्षमा।

**कातिकधवला त्रयोदशी**
३-६११-१९८

देवकान्त झा
निदेशक-सह-सचिव

# तोरा संगे जयबौ रे कुजबा

## क्रम



# भगजोगनी

आ रेखाक आँखि डबडबा गेलै।

हमरा अफसोच होइत अछि हम किए पुछि देलिऐ किछु। सभक अपन-अपन व्यथा होइत छैक, कथा होइत छैक। कियो ककरो व्यथा थोड़े बाँटि लैत छैक।

हम पुछितिऐक नहि। डेरामे अयलापर गुम-सुम पड़लि रेखाकेँ देखि हमरा आश्चर्य भेल रहय। दिन भरि बक्-बक् करैत माथ खयबापर उतारू जन्तु एखन एना गुम्म भेल पड़लि अछि—हमरा ठीके अजगुत लागल रहय आ तेँ पूछि देने रहिऐ—"की बात छै रेखा ? मोन उदास छौ।"

"किछु नहि ! ओहिना किछु सोचा गेल। हँ, अहाँ एत' बैसब की ? हम कनेक 'नयाँ सड़क' सँ भेने आबैत छी"—ओ बातकेँ टारैत हाथमे राखल पर्समे किछु ठिकियाबैत बाजलि।

"नहि, हम एत' नहि रहब एसकरि"। हम अनुमान करैत छी, ई 'दिल्ली बजार' सँ नयाँ सड़क जा फेर औतीह तँ एक घंटासँ उपर हमरा एत' बैस' पड़त, जे हमरा लेल नितान्त मोश्किल अछि। तेँ नकारि देलियनि। मुदा, फेर पूछि बैसैत छियनि- "नयाँ सड़क की काज अछि ? हम तँ ओम्हरे जायब। कयने आयब !"

"ई काज अहाँ बुते नहि होयत। हम स्वयं करब"—पर्सकेँ सम्हारैत बजैत अछि।

बजैतकाल पर्सकेँ छुअब हमरा किछु सन्देह लगैत अछि। रेखाक संगे हमर आत्मीयता पर्सकेँ जबर्दस्ती छूबाक अधिकार द' देने अछि। से हम पर्स हाथमे लोकि लैत छी आ पेंच घुमा ओकरा खोलिक' देखैत छी। पर्समे सोनाक टूटा चूड़ी अभरैत अछि। आन बस्तुमे ककही, ऐना लागल झड़नी, सेफ्टीपीन,

लिपस्टीक सभ छैक । मुदा चूड़ी किए ? मोनमे किछु शंका होइत अछि आ हम पूछि दैत छिऐक—"ई चूड़ी पर्समे किए छौ ?"

"एकरे काज अछि—बजारमे । एकरा......" हम बात लोकैत बजैत छी —"दुत, एकरो डिजाइन कोनो बेजाय नहि छैक । किए तोड़बहिक । नीक लगैत छौक ।" हमरा पता अछि । रेखा गहनाक सभदिन सौखीन रहलि अछि । पचास हजार टाकासँ उपरक गहना छैक ओकरा लग । लेटेस्ट डिजाइन की तँ कीनैत अछि अथवा तोड़िक' बना लैत अछि । आ तेँ पुछने रहिऐ ओ प्रश्न ।

मुदा, सएह बात पुछब रेखाक हेतु दुखद भ' गेलै । ओकर आँखि डबडबा गेलै । भरल आँखिए ओ हमरा दिस तकलक आ कोठलीमे टांगल अपन अत्याधुनिक फैसनमे खिचाओल फोटो दिस टकटकी लगाक' ताक' लागलि ।

हम बात बूझि नहि सकलिऐ । पुनः पुछैत छिऐ—"ठीके, तों तखन चूड़ाकेँ करबही की ?"

"हम एकरा बेचबै"—ठोरपर दांत जमबैत रेखा बाजलि । "अयँ, बेचबेँ ! गय कथी लय ? तोरा कथीक कमी भ' गेलौ ? मजाक नहि कर ।"—हम आश्चर्यमे डुबल बहुत रास प्रश्न पुछवा ले' उताहुल भ' गेल छी । मुदा रेखाक अनुहारक कठोरता तकर अनुमति नहि दैत अछि ।

"घरक भाड़ा पांच सय टाका देबाक अछि । घरमे तरकारी नहि अछि । सिहजीकेँ (पति) बनारस पठयबाक अछि । नोकरी करबा ले' फार्म सब अनबाक अछि । पाइ एक्को टा संगमे नहि अछि, खाली छी । कत'सँ औतैक ई सभ । तेँ ई चूड़ी बेचिक' काज चला लेब......।" हिचुकि उठैत अछि रेखा आब । कतेक कालसँ जाँतल भाव हिलोरि उठैत छैक । आँखिसँ नोर झहर' लगैत छक ।

हम अकबक भेल छी । साँचे हम सुनलहुँ अछि ई बात ? ई रेखा स्वयं बाजि रहल अछि । रेखा... एकटा अति ऐय्यास किसिमक जनानी । जकर दैनिक पहिरना साड़ी तीन-साढ़े तीन सय टाकासँ कमक नहि होइत छैक । पचास टाकाक लिपस्टीक, पच्चीस टाकाक नेल-पालिस, डेढ़ सयक सैंण्डिल—ओकरा लेल



साधारण छैक । बेडरूममे ड्रेसिंग टेबुलपर राखल पांच सय टाकासँ ऊपरक श्रृंगार-प्रसाधन एकर आर्थिक आ मानसिक उच्चताक पहिचान भेल करैत छैक ।

आ, से रेखा आइ ........ ।

हम किछु मास पाछाँ चल जाइत छी । काठमाण्डूसँ एकटा पत्र जनकपुर पहुँचल रहय—"जनकपुरसँ किछु तरकारी पठा दिय' । एत' उपलब्ध नहि ।" हम विमानसँ पन्द्रह-बीस टाकाक तरकारी कोनो अपेक्षित हाथे पठा देने रहिऐ । मुदा ओ अपेक्षित तरकारी गलतीसँ त्रिभुवन विमान-स्थलपर छोड़ि डेरा चल गेल रहय । चारि दिनक बाद रेखाकेँ विमान-स्थलसँ फोन गेल रहै जे अहाँक तरकारी आयल अछि । ओ रानीपोखरिसँ टैक्सी भाड़ाक' विमान-स्थल जाक' तरकारी लेने रहय । ओ तरकारी अनबामे ओकरा तीस टाका टैक्सी-भाड़ा लागल रहै । पन्द्रह टाकाक तरकारी आ तीस टाका भाड़ा ।

हम तकरा बाद जखन काठमाण्डू गेल रही तँ डँटने रहिऐ—"एह, ई कोन बुधियारी भेल ! छोड़ि दितिऐक । एतेक महग ।"

बात लोकैत बाजलि रहय—"अरे, अहाँ की बजैत छी ? की भेलै तँ ! तरकारी हम सभ बड़ प्रेमसँ खयने छलहुँ । आखिर प्रेमसँ पठाओल छलै किने !"

हम किछु बाजि नहि सकल रही । बकर-बकर मुँह तकैत रहि गेल रहिऐ ।

तहिना एकबेर जनकपुरसँ हम अपन एक मित्रकेँ रेखाकेँ कहि देबा ले' कोनो समाद देने रहियनि । आ, टेलिफोन नम्बर सेहो जे ओ फोनक' दिह'थिन । से, ओ काठमाण्डू जा फोन कयलकनि, मुदा ओ नहि छलीह । घरक मालकीन सुना देलकनि जे जनकपुरसँ फोन आयल छल—काठमाण्डूसँ अयबा ले' ।

से जनकपुरमे हम अवाक् भ' गेल रही जखन ओकरा प्लेनसँ उतरि सोझे हमरा डेरामे भेँट करबा ले' अबैत देखने रहिऐ । पुछलापर ओ, प्रायः गामक कोनो समाद होयतै तेँ ट्रंककाल आयल होयतैक, से बूझि जनकपुर, गाम जयबा ले' आबि जयबाक बात बाजलि रहय । हमर मित्रक फोनकेँ ट्रंककाल बूझि लेने रहय आ

आबि गेल रहय अति सहज भ' क'। काठमाण्डूसँ जनकपुर आ जनकपुरसँ गाम । पुनः काठमाण्डू । छौ-सात सय टाकासँ कमक खर्च नहि । आ, से तकर कोनो चिन्तो नहि ।

हम काठमाण्डूए रही । गाम जयबाक रहैक ओकरा । जयबासँ एक दिन पूर्व ओ हमरा पकड़िक' बजार ल' गेलि छलीह । स्वीटर, पेंटक कपड़ा । बेटी ले' फ्राक (६० टाकाक फूल मात्र काढ़ल), घरबला ले' पेंट-शर्ट । अपना ले' तीनटा साड़ी—बारह सय टाकामे । ऊनी ब्लाउज । दू हजार टाकासँ बेसीक सामान छल होयतैक । आ, डेरामे कपड़ा सैंतैत काल भारू नमरीक एक इंच मोटाइक गड्डी आ ई सभ चीज रेखा जानि-जानिक' हमरा देखयबाक प्रयास कयने रहय । ई हम बेर-बेर नोट करी । ओकरा रईसी खर्चपर हम शंका नहि करी तें ई सभ पृष्ठभूमि रहैक । हम ओकर खर्च देखी आ मोनमे पूछी जे ई कत'सँ लबैत अछि ।

मुदा, एतेक देखलाक बादो हम किछु पुछि नहि सकल रहिऐ । किए पुछि-यौक कथू । काठमाण्डूक छौंड़ी सभक डिजाइन आ ओकर ऐय्यासी देखि ओकर आमदनीक स्रोत पुछब अपराध मानल जाइत छैक । हमरामे ई अपराध करबाक साहस नहि अछि ।

आ से बुझायल, रेखा गमि गेल रहय । बाजलि रहय मूडमे—"देखू अभि ! ई सभ जे खर्च देखैत छी ओ हमर छोट दरमाहामे की पूरा भ' सकैत अछि ? हम जनैत छी, अहाँ ई सोचल करैत होयब । त' हम साफ बता दी जे विबाहसँ पूर्व हमर एकटा अभिन्न मित्र छलाह—शेखरबाबू । काठमाण्डूक इन्द्र चौकक प्रसिद्ध व्यापारी । सोल्टी हमरा सभकें लग अनलक । आ, हम सभ बड़ नीक मित्र बनि गेल रही । आइ धरि हमर मित्र हमरा समय-समयपर आर्थिक सहायता देल करैत अछि । दुखक समयमे देल हुनक ई सहयोग एखनो हम 'नहि' नहि कहि पबैत छी । तें हुनकेपर हमर सभ शान-शौकत । आ पति ...। ओ त' बनारसमे पड़ल छथि । हुनका हमरे कमाइ चाही । हम कत'सँ लाबी, तकर हुनका कोनो फिकिर नै । मात्र चाही हुनका टाका, कपड़ा ।"

रेखाक भाषण आर बड़ी काल धरि चलैत जँ एकटा लम्बूसन मरद ओकर



कोठलीमे बेधड़क नहि पैसि गेल रहितैक इशारासँ ओ बता देने रहय जे इएह ओकर मित्र छैक । हम सामान्य शिष्टाचार निभा कोठलीसँ सरकि गेल रही ।

काठमाण्डू सन ठाममे साढ़े तीन सय टाका मासिक भाड़ापर घर ल' क' रहनिहारि रेखाक रईसी, मोनमे तँ कचोट भरैत गेल, मुदा किछु बाजि नहि सकल रही ।

दोसर दिन भेने एयरपोर्टपर हमरा भेंट भेल रहय रेखासँ । हपसिक', हमरा देखिते, लगमे आबि बैसि गेलि रहय । अपना प्रेमीकें एयरपोर्ट नहि आबि सकबाक कारण कह' लागलि रहय । ओकर भाइ आब'बला रहैक बीरगंजसँ, नहि तँ ओ सभ बेर ओकरा एत' छोड़' अबैत छैक । बड़ भला आदमी छैक ओ....। एहू बेर जरूरे अबितैं ।

हम ओकर उत्साह देखि जरि गेल रही । पुछलिऐ—"ई अनकर सहयोगपर कतेक दिन धरि जीवन चला सकबैक रेखा ? आइ नहि तँ काल्हि ओ अहाँसँ छुटबे करत । तखन ई बिगड़ल ऐय्यासीक जीवन की अहाँ भोगि सकब ? बाल-बच्चा भेल आब । पढ़ल-लिखल पति भेटल अछि । सामाजिक मर्यादा छैक....। किछु सोचलिऐक अछि .. ?" हम तहिया ओकरा 'अहाँ' सम्बोधन करैत रहिऐक । हमर बात सूनि रेखाक मुँह जेना कड़ुआ गेलै' । भावावेशमे अपन सोहनगर क्षणक वर्णन करैत काल भविष्यक ई कटु उपदेश सुनबा ले' ओ एकदम्मे तैयार नहि बुझायल । हमर मुँह ओ चंठ जकाँ देखने रहय, जेना हम की कहि देने रहिऐक ।

बमकि उठलि रेखा—"'हुँह' सामाजिक मर्यादा ! कथीक मर्यादा ! १७-१८ वर्षक काँच उमेरमे काठमाण्डू एसकरिये आबि नोकरी करबाले' बाध्य कयल गेल । लड़कीक जीवनमे सामाजिक मर्यादा नामक कोनो वस्तु नहि होइत छै अभि ! हम स्वयं जीवनक बाट बनौने छी, स्वयं चलब । भविष्यक कल्पना हम कर' नहि चाहैत छी । वर्तमानकें खूब नीक जकाँ भोगबाक हमर लालसा अछि—खूब भोगैत छी । साठि टाकाक घरमे टुटलाहा खाटपर कोनो साँझ खाय, कोनो साँझ भुखले सुतबापर बाध्य कोनो लड़कीक जीवनमे के किछु क' देबा ले' अयलैक ? पैदल ताहा चल जायब आ पैदल आयब । घंटा भरिसँ उपर काठमाण्डूक उभड़-खाभड़

सहरजमीन। कल्पना करू तँ, हमरा कतेक कष्ट भेल होयत। एकेटा कपड़ा सप्ताह-सप्ताह पहिरिक' रहल छी हम। तखन के आयल अछि समाजक मर्यादाक रक्षा ले'। धन्य इएह शेखर, जे हमरा नवीन जीवन देलक। आइ जे किछु छी, ओकरे बदौलत·······। जा धरि ओ रहत आ हमरामे बुद्धि रहत, हम एहिना जीबि लेब। नहि चाही ककरो उपदेश···।" आ उठि गेल रहय सीटसँ। फिल्ड दिसक सीसावला खिड़की लग जाक' आकाशमे उड़बाले' तैयार जहाज दिस टकटकी लगा देख' लागलि छलीह रेखा···।

हम स्तब्ध भेल ठाढ़ भ' गेल रही, वेटिंग कोचपर। की सभ बाजि देने रहय रेखा। समाजक प्रति ई विरक्ति··· एकरा नीक-बेजाय सोचबाक बुद्धि घीचि लेने छैक। के कहओ एकरा···। हम तखनो सोचने रही—आइ ने काल्हि ओ सोचती जरूर·······।

आ, से रेखा आइ हमर आगांमे कानि रहलि अछि। संगमे एकोटा पाइ नहि। पाँच सय टाकाक भाड़ापर लेल मकान, पति, बच्ची आ घरक खर्च। नोकरी छुटि गेल छै। फिराकमे अछि। तकर सभ खर्च। मांगओ ककरासँ? से चूड़ी बेचतीह। सोनाक छै, तीन हजार स' उपर देतै। गहना तँ बड़ छलैक। हाथमे औंठी पाँच हजारसँ उपरेक रहैक—हीराक।

हम रेखाक आँगुर तकैत छी। आहि रे वा! ई की! औंठी नहि छैक। कानमे बालीयो नहि। ग़रदनिमे नेकलेश सेहो नहि छैक। पैंतीस सय टाका दाम एक-बेर रेखा कहने छलि। ई सभ तँ बरोबरि पहिरैत छलि? तखन? दुत्! की सोचैत छी हम! पेटीमे बन्न कयने होयत। समयसाल तेहन ने छै। तखन ई चूड़ी? हमरा मोन पड़ि जाइत अछि पछिला बात सभ,आ रेखाक उक्ति—"भविष्यक कल्पना हम कर' नहि चाहैत छी। वर्तमानकेँ खूब नीक जकाँ भोगबाक हमर लालसा अछि, खूब भोगैत छी।"

मोन करैत अछि, मोन पाड़ि दिऐक ओ बात सभ। आ तेँ कहैत छिऐक—"मोन छौक रेखा ओ बात सभ, जे तों हमरा···"

"नहि, मोन पाड़् अभि, ओ बात सभ! टीसैत अछि हियामे हमरा। हमरा सभ मोन अछि। समाजक द्वारा मात्र शोषित हम घृणासँ घेरलि रही तहिया।



हमरा जीवनमे जे भेटल रहय सभ भेड़िया बनि हपस' चाहब। नोरसँ बेसी हमर जवानीमे रुचि रहैक लोकक। एतेक विशाल महानगरमे भूखल आँखिसँ बचिक' रहब—तपस्या रहल हमराले'। मुदा पुरुषक ई रूप हमरा हृदयमे घृणा उत्पन्न करा देलक। आ से बदला लेबाले' हम दर्जनो पुरुषकेँ बेवकूफ बनौने रही। एखनो पचीसो लोक हमरापर दीबाना भ'क' बौआ रहल अछि। हमरा ओकर विरक्ति आकि दुखद स्थिति देखि खुशी भेल करैत अछि। जीवनकेँ खूब नीक जकाँ जीबाक हमर लालसा साँचे हमरा आन्हरक' देने रहय। हम भविष्य नहि सोचने रही। ककरो समयपरक आर्थिक सहयोग किंवा आत्मीय सिनेहकेँ जीवनक आदर्श बुझैत रहलिऐक—आ बाटक निर्माण तेहने कयने रही। से आब बुझलिऐक अभि, ओ हमर धोखा छल। भ्रम छल। जीवनमे बहुत कम एहन क्षण अबैत छैक जखन एकर सार्थकताक अनुभव लोक करैत अछि। हम बुझैत छी—हम गलतीक' रहलि छलहुँ। ई महानगर हमरा भोतिया देलक। मृगतृष्णाक पाछाँ बेहाल रहलहुँ।

"की तों गलती सुधारि सकैत छेँ?" हमहूँ कनेक बेसिए कटु भ' गेलहुँ।

"हँ, हम ताहि दिस प्रयासक' रहलहुँ अछि, तेँ तँ नोकरी नहि रहनो आइ कोहुना गहनापर खेपि रहल छी।.देखैत छिऐक—कानमे बाली, आँगुरमे औंठी आ गरामे नेकलेश किछु छैक? सभ बन्हकी राखल छैक। माँ आयलि छलीह। मौसी गेलीह गाम, सभकेँ पठयबाक रहय। अपने पहाड़—सासुर जयबाक रहय। घरक भाड़ा, खयबाक सामान सभ। घरवलाक खर्च। एही सभमे बन्हकी ध' ध' क' काज चलाओल अछि। की अहाँ एकरा पुरनका बातकेँ विस्मृत करबाक लक्षण नहि बुझैत छी?"—रेखा आँचरसँ आँखि पोछैत बजैत अछि।

"तखन की शेखरसँ आब···" हम कनेक नरम होइत छी।

बीचेमे लोकैत रेखा तड़पि उठैत अछि—"नहि लिय' नाम ओकर। ओ हमर जीवन तबाहक' देने अछि। शुरुएमे यदि ओ हमरा खर्च नहि दीत, सहायता नहि करैत तँ हम नहि बहसितहुँ। हमर बर्बादीमे ओकरे हाथ अछि। जानिक' भलेँ ओ किछु नहि कयने होअय. मुदा हम आब बुझैत छी, ओ बिगाड़ि देलक हमर चालि। आइ डेढ़ माससँ उपर भेँट भेला भेल ओकरासँ। हम नहि चाहैत छी, भेटय। तेँ ने ई कर्ज सभ....।"

"की एखनो ओ सहयोग करतौ·······?"

कनेक काल रेखा देबालपर एकटक देखैत अछि। जेना कतहु भसिया गेल हो। पुनः सम्हरिक' बजैत अछि—"हँ एखनो जँ हम ओकरा अपन हालत कहियौक तँ ओ सहायता करत। मुदा से हम चाहैत नहि छी। बीतल क्षणक दर्दकेँ आब आर जियाब' नहि चाहैत छी हम। पति छथि, बेटी अछि। एकरे देखि जीवन निबाहि लेब हम। हम नहि चाहैत छी, आब पति हमर बीतल जिनगीक पाछाँ अपस्याँत रहथि....।"

"तखन शेखर·······?"

"शेखर आब हमरा लेल भगजोगनीसँ बेसी महत्त्व नहि रखैत अछि अभि! हमर अन्धकारपूर्ण भविष्यमे टिमटिमाइत एकटा अति क्षीण इजोत। जकर नियति आब हमरा ल' स्पष्ट नहि। जकरा सहारासँ हम अपन दाम्पत्य जीवनक बाटकेँ देखि नहि सकब। ओ आर भोतिआ देत—भकचोन्ही लागि जायत हमरा। ओ ज्योति एकटा भ्रम छोड़ि किछु नै भ' सकैछ हमरा लेल। आ जीवन भरि जिनगीक गलत मिथकक पाछाँ बेहाल रहनिहार हम—आब आर भ्रममे पड़' नहि चाहैत छी अभि··।" आँखिमे उतरि आयल नोरक बुन्नकेँ फेर साड़ीक कोरसँ पोछैत बजैत अछि– "चलू, अहूँ ओम्हरे चलब ने! साँझो पड़ि सकैत छैक। आ आइए काज होयब जरूरी अछि। अहाँके बुझले अछि··।" पर्सकेँ सम्हारैत रेखा उठैत अछि। आइ बहुत दिनपर रेखाक अनुहारपर एकटा शांति देखि पड़ैत अछि। बाहरी दुनियाँमे अपन चालि-ढालि, पहिरन-ओढ़न, बोली-बानीसँ अत्याधुनिका, 'ग्लैमर गर्ल'क रूपमे जानल जाइत रेखा हमरा आगाँमे गम्भीरता आ शांतिक प्रतिमूर्ति भ' ठाढ़ि अछि। बुझाइछ, सौंसे दुनियाँक घर-गृहस्थीक चिन्ता एसकरे रेखे उठा लेने हो।

हम यंत्रवत् रेखाक पछोड़ धयने डेरासँ निकलि जाइत छी।



# अन्हारमे भोतिआयल एकटा सिपाही

आखिर गणेश मरिये गेल। ओकर लोक-वेद कहाँदन आंघराइत-आंघराइत देह-हाथ फोड़ि लेने रहैक। कोना ने! जीबाक एक्केटा वएह आसरा रहैक। ओकर पन्द्रह रुपैया महिनापर बड़ सन्तोष रहैक बुढ़िआकेँ। कमौआ बेटा जुआनीमे कात भ' गेलै बहु ल' क'। आ बुढ़बा-बुढ़िआपर सगरो संसारक भार पड़ि गेलै। धिया-पुता एही ले' जनमबैए—गणेश बरमहल कहल करैक।

कातो भेने गणेशकेँ कल्याण नहि रहैक। एक्के आंगनमे रहबाक कारणे सभदिन जेना एकबेरक' गारि-हुज्जति दुनूकेँ देबे करैक बेटा-पुतहु। मारबो-पिटबो करैक। एह! एक दिन कूहल देह ल' क' घरबला लग पंचायतमे आयल रहय बुढ़िया। भरल पंचायतमे हाक लगा गेल रहय बुढ़िया—'तोरा अछैत हमर ई दुर्दशा!' गणेश कहुना मनाक' घर ल' गेल रहैक आ बेटा-पुतहुकेँ डाँटि देने रहैक। मुदा आब? आब तँ ओकर परोक्ष भ' गेलै। कुहल देह ल' क' ओ आब कत्त' जायत? ककरा कहत ओ—तोरा अछैत हमर ई हाल! आब तँ ओकर परोक्ष भ' गेलैक!

से जखने सुनलक गणेशक परोक्ष भ' गेलै, उदास भ' गेल। बड़ कचोट होइत अछि। ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व हमरा आँखिक आगाँ नाचि जाइत अछि। ओकर वाक्पटुता, कर्त्तव्यनिष्ठा सम्पूर्ण गाँआकेँ मोहि लेने छलैक। सत्ते, ओ कर्मयोगी छल—काजुल छल।

गामक 'पीन' रहैक गणेश। सम्पूर्ण गामक सिपाही। कोनो पंचैती बैसयबाक हो तखन, कोनो मेलाक आयोजन हो तखन, कोनो एकाह-नवाह हो तखन, गणेशक उपस्थिति अनिवार्य बूझल जाइत छल। आ ओहाँ अपन लगन सँ एहि सभमे भीड़ल रहल करय।

पन्द्रह रुपैआ मासिक पंचायत छलै ओकरा। आजुक समयमे एतेकसँ परिवार चलायब बड़ कठिन नहि, असंभव थिक। मुदा ताहूमे बूढ़ सन्तुष्ट रहैत

छल। ओकरा दशक काज करबामे बड़ आनन्द अबैक। ओकर इएह परिश्रम ओकरा गाम भरिमे लोकप्रिय बना देने रहैक।

तेँ गणेशक मरि जायब मामूली बात नहि छलैक। सौंसे गाममे सोर भ' गेलै। लगले पसरि गेल रहैक जंगलक आगि जकाँ। सभक करेज जेना चहकि गेलै। क्लांत भ' गेल रहय गौंआक अनुहार। एकटा अथक सहयोगीकेँ चलि जयबाक दर्द सभक आँखिमे सहजेँ देखल जा सकै।

गोर दप-दप। पचास-पचपनक उमेर। काज करबामे हठगर। हाथमे एकटा पातर लाठी रहल करैक, जकरा कैक बेर लोक चोरा लेल करैक। ठेहुन धरिक धोती, जे अंगपोछा सेहो बनि जाइक। ठोरतर दबने खैनीक जूम। आ किछु उचकिक' चलबाक अभ्यासी गणेश। हमर गणेश सौंसे गौंआक सिपाही, जे आब नहि रहल।

सत्ते ई अनुभूति मोनकेँ पीड़ा दैत अछि। बड़ संसर्ग छलैक हमरा ओत' ओकरा। प्रधान होयबाक कारणेँ आ हमर पुरान गोराइत होयबाक कारणे सेहो। कोनो टहलकेँ बजयबा ले' सदैव तत्पर। ओकरा लेखेँ जेहन आंगन तेहन बाहर। मजकियो बड़। फगुआ दिनक ओकर पहिरन देखि अनायास हँसि पड़बाक मोन होइक। हमरे हरिपुरवला बट्टीदारसँ माङल दाउरा, सुरवाल, टोपी आ बाबुक पुरना जूता पयरमे आ आँखिमे टूटल बाँहिबला चश्मा, जकरा ओ डोरीसँ बन्हने रहैक। हाथमे वएह पतरका लाठी। छौंड़ा सभ देखि-देखि किछु कहि दैक आ ओहिपर गणेश ताल तोड़' लगैक।

जहिया हम बड़ छोट रही तँ देखिऐक एहिना बड़े अबैत ओहि बूढ़केँ। सभ क्यो ओकरा गोराइत कहैक। हमर जमीन छै किछु उत्तरभर पहाड़मे। बटैया लागल। ओतहि ओ गेल करैत छल आ उपजाक आधा भाग लबैत छल— मकै, गहूम, तोरी आ बहुतरास रब्बी-राइ सभ। तहियासँ एकरा देखि मोन गर्वित भ' गेल करय जे ई हमर गोराइत अछि। छौड़ा सभक बीच हमर सीना तनल रहैत छल —अपन खास सिपाही होयबाक कारणें। आ, आइ हम वएह दृश्यकेँ मोन पाड़ि चिहुँकि उठैत छी। आइ हमर सिपाही हेरा गेल अछि। हम असुरक्षित भ' गेलहुँ अछि मने !



पता लागल अछि, बाबू हरिपुर गेलाह अछि। रब्बी-राइक सम्बन्धमे खोज करय। सोचैत छी, हुनक आत्माक छटपटाहटि क्यो नहि देखि सकैत अछि। सदैव संग आ जी-हजूरीमे रहनिहार हुनक अभिन्न सहयोगी गणेश आइ हुनका संगे नहि गेल छनि। आब कहियो जाइयो नै सकतनि।

किछु दिनसँ एम्हर गाम नहि नीक लगैत अछि। गामक प्रत्येक प्रवासक संग जोड़ल अछि गणेश बुढ़बाक संस्मरण। जे रहि-रहिक' हमरा विचलितक' दैत अछि। बजारक दिन तँ आर उदास लगैत अछि। आंगनमे जाइत छी तँ सुनैत छी—'तेल लयबाक छै। प्याजो घटले छैक। जीर, मरीच-तरकारी सेहो लाबहि पड़तैक। हँ, आइ तँ बजारो छैक—माछो तँ आनहि पड़तैक। कत' गेलथिन माय ! पठौथिन ककरा ? सत्ते सभक आगाँ आब एकटा प्रश्नचिन्ह जागि जाइत छैक—पठौथिन ककरा ?

हमरा नोकर-चाकरक कमी अछि से बात नै। सभ अछि मुदा विश्वासी नहि। बिसबासी छल गणेश बुढ़बा। एकदम फिट। मिरचाइ-प्याजुसँ ल' माछ-मासु धरिक वएह कीन-बेसाह करैत छलैक। आ, साँझखन आंगनमे मायक आगाँ गमछाक खोँइछ बना ठाढ़ गणेशक भाव मायकेँ बुझबामे भाङठ नहि होइत छलनि। किछु—चूड़ा आ एहनेसन खाय-पीब' बला किछु द' देल करथिन। गणेश तृप्त भ' गेल करय।

गामक बजार आब उदास लगैत अछि। ओतेक भीड़मे भोतिआयल हम अपन गोराइतक अनुहार तकैत रहैत छी। मुदा नहि भेटबाक रहैछ, नहि भेटैछ। अपन बतहपनीसँ स्वयं हमरा कचोट होइत अछि। मुदा ....।

हमहीँ किए ? गामक बहुत रास लोक ओकर अनुपस्थितिसँ खिन्न रहैत अछि। छौड़ा सभक हेतु तँ जेना बज्रपाते भ' गेलैक। ककरा कहतैक ओ— "फतुरी" आ के अभ्यस्त हाथेँ लाठी उठा मारबाले' छुटतैक। गणेशक मुँहसँ गारि सुनि लोक आर किचकिचा दैक। आ ओकर 'मूड'पर आर जोर-जोरसँ हँसय। थपड़ी पाड़य। आब ओकराले' गणेश एकटा टीस भ' गेलैक अछि। ओकर फतुरी ओकरासँ बहुत दूर चल गेलैक, जकर पूरी खयबाक लालसा आ जकर गाड़ि पढ़बाक मुद्रा ओ कतहु ने देखि सकत।

ओकर फतुरी आब नहि रहल। बड़ सुधुआ लोक रहय गणेश। सुपत-कुपत सभके' कहि दैक। क्यो दुखो नै मानैक ओकर बातके'। बरु केहनो क्लांत वनुहार ओकर बात सूनि बिहुँसि उठैत छल। ओकर परोक्ष भेलापर बहुत रास घटना सभक स्मृति अनेरे मोनके' भारी बना दैत अछि। ओकरा संगे बिताओल नेनपन, ओकर देल मान-स्नेह एकटा हूक बनि भीतर खटकि रहल अछि। अव्यक्त वेदना सत्ते बड़ दुखदायी होइछ !

मरैत अछि सभ क्यो मुदा गणेशो मरि सकैछ, हम सोचने नहि छलहुँ। नहि मरैत कहियो से बात नहि—एखन मर'बला स्थितिमे ओ नहि छल। खूब काम-काज करैत। ने कोनो दुख, ने कोनो तकलीफ। लोक तँ सएह देखैत छलैक आ तेँ ओकरा ठीके बूझब सभक हेतु स्वाभाविक।

से एक दिन एतहि केयो गोटे हमरा कहलक जे गणेश मरि गेलै तँ हम सन्न रहि गेल रही। की पुछियौक जे कोना ? हमरा अपन कानपर विश्वास नहि भेल रहय, आ जखन आश्वस्त भेलहुँ तँ ज्ञात भेल जे आइ ओकरा दारू पीबि गेलैक। ओकरा दारूक सेहो लति रहैक। पाव-आधपाव कहियोक' पीबि लैत छल। आ, से कोनो ओकरा शारीरिक कष्ट नहि पहुँचबैक। ई स्वभाविक भ' गेल रहय ओकरा लेल। मुदा वएह स्वाभाविक दारू ओकरा मारि सकैछ—सोचियो ने सकैत छलहुँ। पाव भरि, आध पाव पीलासँ केयो मरैत नहि अछि आ एहिसँ बेसी पीबाक ओकरा सामर्थ्य नहि छलैक। तखन ? कतेक पीबि गेल ओ दारू ? की ओ मरबा लै' मात्र पीने छल ? की दुख छलैक बुढ़बाके' ? प्रश्न अछि। के देअओ उत्तर ?

ओना लोकके' एहि प्रश्नक उत्तर देबाक कोन प्रयोजन ? ओकरा तँ दिन-राति हजूरीमे ठाढ़ एकटा गोराइत चाहिऐक। नीक-बेजायमे रंग देनिहार एकटा सिपाही चाहिऐक। अपन व्यथासँ व्यथित कयनिहार पारिवारिक दुख-दर्दमे फँसल गणेश नहि। तेँ सोचैत छी जे लोक एहि प्रश्नक उत्तर एखन द' सकबाक स्थितिमे रहैत तँ गणेश मरबो ने करितय। गणेश मरल अपन खातिर नहि, अनका खातिर। अनकर दर्दके' समेटनिहार बुढ़बा स्वयंकेर दर्दसँ हारि गेल। के बुझत एहि मर्मके' ?

दिनमे भोरे भट्ठीमे बैसल तँ साँझ धरि कनेक-कनेक पिबिते रहि गेल। ओ अपन पाइसँ पीलक वा केयो ओकरा पिऔलकैक, कहि नहि। मुदा ओ पीलक



जरूर आ से खूब पीलक। कहल जाइछ, दारू लोकक मोनक दुख-दर्दके' बिसरबाक अचूक साधन होइछ। मुदा के पुछितैक ओहि बुढ़के' जे ओकर केहन दुख छैक। जे सदाक हेतु ओकरा सभ किछु बिसरबाक हेतु बाध्यक' देलकैक। ओकर दुख-दर्दसँ लोकक कोन काज। ओ तँ गामक गोराइत छल—सिपाही छल। काज तँ ओकर जिनगी छलैक। काज आ प्रशंसा !

ओहि दिन पीलाक बाद साँझखन घर जा सूति रहल। कहाँदन निफाल-वाली बेटी आयल रहैक पूरी ल' क'। कहने रहैक उठाक'—'बाउ, पूरी खा ल' न'!' —'काल्हि भोरे दीहे' कहि करोट फेरि बुढ़बा सूति रहल रहय से सुतले रहि गेल। पुनः कहियो नहि उठबाक हेतु।

कखनोकाल वायुमण्डलमे खट् खट् खट् खट् शब्द सूनि चौंकि उठैत छी—कतहु गणेश बुढ़बा लाठी टेकैत तँ नहि आबि रहल अछि ! मुदा नहि, आगामे एकटा विराट अन्हार छोड़ि आर किछु नहि देखाइ पड़ैछ।



# भोतिआयल बाटक बटोही

'अहाँ गाम नहि गेलिऐ यौ !'—क्यो गोटे आश्चर्यसँ रोडपर ककरोसँ पुछैत छैक। हमरा नहि नीक लगैत अछि ओकर ई पूछब। क्यो कतहु जयतै, नहि जयतै, से लोकके कोन मतलब ? मुदा ओ हमरास नहि पुछने रहय। तेँ उत्तरक अपेक्षा ओकरा पुछनिहारसँ रहैक आ ओ उत्तर देबो कयलकैक। ओ सन्तुष्ट भ' आगाँ बढ़ि गेल रहय।

मुदा हमरा सन्तुष्टि नहि होइत अछि। गाम लोक किए जाइत अछि ? एहि कॉलोनीक बहुसंख्यक लोक गाम चल गेल अछि—बहुत दिनपर। होरी, छठि, दशमी वा अन्य कोनो तेहन सन परब—नोकरिहाराक हेतु अपन लोकसँ भेट-घाँटक बहाना होइत छैक। से, देशक विभिन्न प्रान्तसँ नोकरीक क्रममे आयल एतुक्का लोक गाम चल गेल अछि—जे बाँकी अछियो ओ एक-दू दिनमे चल जायत। जे नहि जा सकत, ओ एहिना लोकक प्रश्नक भाव उघैत सड़ैत रहत एत'..।

आ हमहू एत' आबि सड़ि रहल छी। से बात एत' अयलाक बादे हमरा अनुभव होब' लागल अछि। एहिठामसँ बड़ आवेशसँ गाम जाइत अछि। जेना गाम पर ओकर खुशी ओकर प्रतीक्षा करैत होइक। ई दोसर बात छै जे वएह गाम ककरो लेल कठपीज जकाँ भीतरसँ टीस मारैत छैक आ लोक एहिना कतहु पड़ल-पड़ल आनके गाम जयबाक आवेश निहारैत रहैत अछि।

अबैत काल देखने रहिऐक बसमे दूर-दूरस कमौआ बेटा, पति, भाइ, बाप अपन घर जयबाक उत्सुकतामे बसके उचितो स्टापपर रोकब पसिन्न नहि करैक। एक पतियानीसँ छोट-पैघ मोटाक बस-स्टापपर अनेरे भीड़ उमड़ैत—हतासल। एक पतियानीसँ छोट-पैघ मोटाक नबकनियाँ सभ—क्यो जाइत, क्यो अबैत। आ, हम एहि सभ उत्सुकता मध्य अपराधी जकाँ अबैत रही। यन्त्रचालित सन। गाम जाइत लोकक अनुहार देखबाक हमरा साहस नहि होअय—से मूड़ी गोँति हम डेरा आयल रही।



एतहु अयलापर मोन शांत नहि भ' सकल। लोकक अनुहारमे जेना हमरा लेल एकटा उपेक्षा बूझि पड़य, लकड़ीक आड़ा जकाँ चीरैत नजरि हमरा बुझाय जे सभ हमर बात बूझि गेल अछि। हम गाम छोड़ि आन ठाम आयल छी।

हम कैक बेर एत्त' अयलहुँ अछि, मुदा एहिबेर जकाँ मोन कहियो ने कचोटलक अछि। मोन कैक बेर दुत्कारैत अछि—हम एत' अयबे किए करैत छी ? मृग-मरीचिका जकाँ अनेरे बौआय !

पत्नी घरसँ समाद पठौने छलीह—पूर्णिमा के हम आयब। पाइ रखने रहब। मुदा हम बड़ उपेक्षासँ बात टारि देने रहिऐक आ पड़ा आयल छी एत्त'—घरस दूर, पूर्व छोरपर.......।

एहि दूर प्रवासक सेहो एकटा नमहर इतिहास रहलैक अछि। अपन अस्तित्व रक्षा ले' बुढ़बा बेलपर लतरल अमरलत्तीक भ्रम पोसने बौआइत हम—एहने सन एकटा आत्मीय सम्पर्कक क्रममे एत्त' लटकि गेल रही। से आइ धरि गछारने छी एकरा। हमर इएह चतरब बतहपनी भ' गेल अछि। हम बहकि गेलहु अछि तेँ होरियोमे एत्त' सड़ि रहल छी।

एत' अयबाक क्रम—एकटा मृग-मरीचिकाक भ्रममे बौआइत शावकक गतिक प्रतीक रहल अछि—से हम जनैत छी आ जानि-जानिक' अपन तकदीर लिखबाक जोखिम किंवा हठधर्मिता निवाहि रहलहु अछि। तेँ तँ ने आइ धरि लोक हमरा हमर एहि खोजके बौआयब छोड़ि आर किछु नहि कहि सकल अछि।

आन तँ आन, बाबूके सेहो हमर एत' अयनाइ नहि अरघैत छनि। एखनो जखन हुनका पता लगतनि हम एत्त' छी, ओ बोमिया उठल होयताह—"दुर, जाव जत' मोन होइहै तत्त'। देखै छिऐ' कोना धीया-पूताके पालि लै है। एना बाबू बनलासँ आ गामे-गाम घुमलास होइतै त सभ क' लीत....।" आ, हुनका आगाँमे केओ कुर्सीपर, केओ चटाइपर त क्यो इसकुलिया बेंचपर बैसल—गूजन, लक्ष्मी, बीजलाल सन लोक हुनकोसँ एक धाप आगू बढ़ि हमरा उखलैत होयत। हमरास कोनो रीस होयतैक से नहि—बाबूके प्रसन्न करबाक एकटा बहाना—एकटा माध्यम। हुनका हँ मे हँ मिला लोक अपन इच्छा-पूर्ति करैत आयल अछि। गामक प्रधान पंच—भैल-गेलमे ..! हम ईहो बुझैत छी, जखन हम गाम जायब तँ

इएह सभ हमरो लग आबि बाजत—'दुत् तोरो बुढ़बा आब सठिया गेलह । बाजक एकोरत्ती ठेकान नै छै । कहू त', आब ई सभ बच्चा छै !—अपन नीक-बेजाय नहि सोचि सकै छै ..!' आ हम मात्र मुस्किया क' रहि जायब । हम ई बेला कैक बेर देखि चुकल छी, तेँ नीक जकाँ जनैत छी ।

मुदा एते धरि जरूर जे एहि बेर हम स्वयं अनुभव करैत छी, हमर ई भोतिअयबाक प्रवृत्ति समयकेँ सेहो बिसरा देने अछि । तेँ तँ आइयो—होरियो केँ गाम नहि छी ।

काल्हिए आयल अछि एत' । अबिते पछबा हवा अनघोल कर' लागल छैक । हम बहैत हवाक विपरीत दिस जाइत-जाइत बहुत दूर अपन गाम चल जाइत छी । क्वाटरक आगाँमे पैघ-पैघ गाछक सुखायल पातक खर-खर स्वर जेना गामक कथा कहि रहल बुझाइत अछि । पत्नी शहर आयलि छथि संगहि दुलरुआ सारि—रामदाइ सेहो । दुमहलाक नीचाँ-उपर लोक करमान लागल छैक । लोकक ई भीड़—फागु पूर्णिमामे घूमल जाइत पंचकोशी परिक्रमामे घुमवाले' आयल होयतैक । जय सीयाराम जय जय सीयाराम—सम्पूर्ण परिक्रमा-पथ आ शहरमे गुंजित छै । नेपाली भाषी छौंड़ा सभ कारी, पीयर, लाल अपन-अपन मुँहमे लेपने हाथमे फुचकारी लेने यात्री सभकेँ बेहारि-बेहारिक' रंग द' रहल छैक । कैक बेर त' लोक विटियो दैत छैक । पीटीक कोना ने ! लोक साले-बरीसपर घराउ निकालि क' मेला अबैत अछि—सेहो ई पाजीसभ रंगसँ रंगि दैत छैक । रंग कहूँ एना खेलयलैए । खेलयतै काल्हि । एकटा पुरना बोतौ आ उघारे देह । हारो मतेक हारतै ततेक । मुदा आइ तँ....।

मोन उड़ैत अछि—डेरापर अनघोल होइत होयतैक । नापल सिदहा हम छोड़ि आयल रहिऐक मुदा आइ खायबला मुँहक कमी नहि । दर-दियाद, कर-कुटुम सभ लगारबला सभ । हो-हल्लामे क्यो खायत क्यो नहि खायत । जे नहि खायत से अनेरे मुँह फुलाओत । सेहो हमरेपर । मेला-ठेलामे घर छोड़ि दैत छैक । नोकरो परेशान-परेशान भेल होयत । ओना छैहो ओ असल धीमड़ कोढ़ि । सात बजे जे खयनाइक ओरिआओन कयने होयत से बारह बजे राति धरि चूल्हिपर बासन चढ़ले होयतैक—एक मुट्ठी दाना खयबाले' एतैक झमेला''' ।



एहि सभ स्थितिक मध्य कोनो तरहक असुविधापर पत्नी गरजि उठलि होयतीह । ओना हमर एत' अयबे ओकरा त्रिशूलक नोक जकाँ फाड़ने जाइत होयतैक । ताहिमे आइ तँ मायो आयलि होयतैक ओकर । सुना-सुनाक' सभकेँ गवाही धरैत होयतै– "हम सभ एत' छी आ ओ''' ''।"

आ ओ......माने हम एत' छी । साँचे हम अपन घर-दुआरसँ बेस दूर एत' पड़ल छी । किए ? ओतुक्का अपनेमे बेहाल पैघ जमघट हमर प्रश्नक उत्तर नहि द' सकत, ने दिन-राति जिदियाह नेना जकाँ एक्के बातपर अड़ल हमर पत्नी, आ ने अन्तिम वयसक पुण्य-लाभ करैत ओकर माय । रामदाइ सेहो किछु जवाब नहि द' सकतीह, जनिका अयबाक हम बड़ इच्छापूर्वक निमंत्रण देने छलिऐक आ जे एखन आबि बहिन संगे हमरा फज्झति करैत होयतीह—"तँ ठीके । पाहुन बहसि गेलै आब ।" सभक नजरिमे हम एखन अपराधी बनल होयब, सभ क्यो दुर-छिया कयने होयत । सभक एक्के मत होयतैक—हम भठि गेलौं । हमरा कोठलीमे टाँगल हमर फोटो दिस कटुतासँ ताकि बातकेँ उखलनिहारक कमी नहि होयतैक—"कहु तँ, लोक देश-विदेशसँ पाबनि-तिहारमे गाम आबैए आ फलामा कोनाक' धीया-पूताकेँ छोड़िक' ओइ (कोनो नीक विशेषण नहि) लग चल गेल है ।" आ, हमर फोटो सभक राग-उपराग मुस्किआइत ठोर द' क' पीने चल जाइत होयतैक । ओ तँ फोटो छैक—हमहूँ एहिसँ बेसी की क' सकैत छलिऐक । की हम चिकरिक' महल्ला केँ माथपर उठा, कहि सकितिऐ जे हमर ई बौआयब एही बाल-बच्चा आ धन-सम्पत्तिक रक्षार्थ अछि । हम अपन जीबाक आधार खोजि रहल छी । मोनक व्यथा कहि सकबा ले' मनुक्खकेँ तलासि रहल छी ....।

लोक हमर एहि बातक अर्थ नहि बूझि हमरा बताह बना देत—ओकरा तँ कोनो अर्थे ने लगैत छैक । भरल घर धीयापुता, बाप-माय जीबैत, भाइ कामगरदा पीठपर । खेत-पथार । शहरमे कोठा-सोफा । पढ़ल-लिखल लोक । ताहि पर मनुक्ख खोजबाक गप ! बहसल मोनबला लोक एहिना सोचैत छैक ।

हम सभ जनैत छी—ओ सभ हमर बात नहि बूझि सकत । पत्नीक एकभगाह बात सभ पीबि गेल अछि । हम पढ़ुआ लोक झूठ बेसी बजैत छी—पत्नी

सुधुआ, गमौआ—साँच बाजब तँ उचिते । आ तेँ सभक नजरिमे हम दोषी बनल रहैत छी—"नेतागिरी कर' लागल छै । गेलै आब !"

आ पत्नी शांत बनल रहैत छथि । ओ सभ बुझैत छैक, मुदा अपन आदतिसँ नचार अछि । ओ अधकचाह माँटिक मूरतसँ बेसी किछु बनि नहि सकलीह । ओ केहनो परिस्थिति होइक, एक्के बातक उपराग हमरा दैत आयलि अछि—अपने छिछिआयल फिरतै से धीयापूताकेँ की कमाक' खोआतैक ? आनक बेटी-पुतहु ले' बेहाल रहैय', तकरा अपन धीयापूता कहूँ नीक लगलैय' । हम त' सराधक' देबै, आबो त' के अबैय' । अपना ले' लल्ल आ जगत्तर ले' दानी – ''''।

हम कैक बेर बुझा चुकल छियनि । मुदा, से जँ बुझिए गेलीह तँ हमर पत्नी कथीक ? मौका भेटलापर चालू—"अपने छिछिआयल फिरतै... ।"

मोन घोर भ' गेल करैत अछि । कहिओ क्यो सोचने अछि– एहि छिछिआयबाक जिम्मेबार के ?

मुदा तेँ की ? छिछिआइत छी, तेँ दोषी छी । कहाँक लोक कहाँ गेल आ हम......?

—"किओ लक्ष्मी बाबू, एहिबेर ?····" बाहरमे ककरो कहैत ई आवाज पूरा सुनबासँ पूर्वे हम खिड़की चट् द' बन्नक' लैत छी । हम बुझैत छी जे ओ कहबे करतै कि एहिबेर होरीमे गाम नहि गेलिऐ की ? आ जे सुनबाक हमरा आब साहस नहि अछि ।



## नोरक बन्न

'चींSSSS ...चींSSSS... क्याँ ...' चिकड़ि उठलै अपन खोंतामे छटपटाइत बगरा । नीचामे बैसल रवीन्द्रक दृष्टि सहसा ओकरापर पड़ि गेलैक । ओ देखलक जे एक गोट बगराकेँ ओकरा खोंतामे रहनिहार बगरा सब धकेलि रहल छैक, चारूकात लुधकि रहल छैक ....नोचि रहल छैक आ ओ बगरा छटपटा रहल अछि – चिचिया रहल अछि । केओ नहि देख'बला छैक ओकर दुखकेँ । कात-करोटक बगरा सेहो ओकरापर च्याँ ...च्याँ ...चीं....चीं ...क' रहल छैक, जेना ओहो कहि रहल हो—बेस कयल ...बेस कयल ।

आ ई सब दृश्य देखि रहल छल रवीन्द्र । अपन जीवनसँ निराश ओकरा बुझाइत छलैक जे ओहो ओइ असहाय बगरासँ कोनो कम नहि अछि । ओकरो स्थिति अपन परिवारमे ओहिना छैक । समाज ओकरापर ओहिना हँसि रहल छैक आ ओ एहि पारिवारिक परिस्थितिमे पड़ि छटपटा रहल अछि, चिचिया रहल अछि, ठीक बगरे जकाँ । एह....कतेक मेल खाइत छैक ओकर आ अइ बगराक जीवन ! ओकरा बुझाइछ जे ओकर जीवन जीवन नहि छैक । पारिवारिक वातावरणमे जकरा मेल नहि होइक ओकरा ओहि परिवारमे जीबिक' की होयतैक । आ एहि प्रसंगे ओकरा मोन पड़ि जाइछ किछु मास पूर्वक एक गोट घटना...।

ओकर स्त्रीक पेटमे बड़ दर्द भ' रहल छलैक । ओहि बेचारिक अजीब हाल छलैक मुदा आँगनक केओ घूरिक' नहि देखने रहैक । रवीन्द्र गामेपर छल मुदा की क' सकैत छल ओ माय-बापक आगाँ । कोनो कारणवश ओकरा शहर आब' पड़लैक । तखन ओ भायकेँ ओकरा डाक्टरसँ देखा देबाक हेतु कहि, चल आयल रहय । कहाँदन डाक्टरो अयलैक... सुइ देलकै आ किछु दवाइक नाम लीखि देलकैक । आब' बेरमे बाबूसँ पाइ माँग' गेल रहै अपन फीसक । मुदा नहि जानि किए, नहि देलथिन । उनटे बीसटा बात बाजल रहथिन बाबू । रवीन्द्रकेँ केओ कहने छलैक—एतेक धन-सम्पत्तिक रहितो चारिगोट टाका फीस नहि जुड़लैक एहि परिवारमे । एहि

ठाम मात्र काजकेँ महत्व देल जाइछ, जानकेँ नहि। किछु नहि फुराइछ रवीन्द्रकेँ। ओकरा बुझाइछ जे ओकरा जीवनमे दुःखे दुःख भरल छैक। आर किछु नहि।

की सोचने छल ओ ! ओकरा मोनमे कतेक रास आशाक महल बनैत रहलैक अछि आइ तक। मुदा सब जेना बालुक भीत जकाँ ढनमना-ढनमनाक' गीड़ि रहलैक अछि आ ओ बैसल ओहिना देखि रहल अछि। की करतैक बेचारा ? ओहो तँ आखिर परिस्थितिक मारल थीक। कतेक वर्ष पूर्वहिसँ ओ सोचने छल जे किछु बनत। ओ दुनियाँकेँ बहुत किछु देखाओत। दुनियाँकेँ अपन अलौकिक प्रतिभासँ दंग क' देतैक। नाचि उठतैक ओकर कृतित्त्व, मुदा... ओकरा बुझाइत छैक जे सब बात ओकरा अन्तरमे ओहिना छटपटाइत रहि जयतैक। कहिओ ओकरा बुते ई सब पार नहि लगतै आब।

ओकरा अन्तरमे जेना हलचल होब' लगलैक। बुझाय' लगलैक जे ओकरा अन्तरमे सजाओल सपना सब सपने रहि जयतैक। ओ कहियो प्रत्यक्ष नहि देखि सकत, कहिओ ने। ओह...! ओकर हृदय चीत्कारक' उठलैक। आ ओकरा बुझयलैक जे ओकर आँखिसँ नोर बहय लागल छैक.... नोर...। वास्तवमे, नोर मनुक्खक' एक एहन संगी छैक जे विपत्तिमे किछु घड़िक लेल शान्ति प्रदान करैछ। लोक एकरा देखि अपन अन्तरात्मामे नुकायल दुःखकेँ देखबाक प्रयत्न करैछ। सत्ते...हृदयक अनन्त दुःखराशिकेँ व्यक्त करबाक अभिव्यक्ति थीक नोर। आ एएह नोर रवीन्द्रक गालपर खेलाय लगलैक। ओकरा बुझाइछ, इएह ओकर जीवन छैक ...जहान छैक। दुःख-तकलीफमे ओकरा इएह नोर त' संग दै छै। आर ओकरा छैहे के जे जटिल परिस्थितिमे सान्त्वना देतैक। तेँ ओकरा विश्वास छैक जे नोरक प्रत्येक बुन्द ओकरा सान्त्वना प्रदान करैछ।

ता केओ बहारसँ केबार ढकढकबैछ। चौंकि उठल ओ—कत' चल गेल छल ? रूमाल ल' आँखि साफ कयलक आ केबार खोल' गेल। जखन केबार खोललक त' देखैत अछि अपना आगाँमे एक गोट छौंड़ाकेँ ठाढ़। उमेर १४-१५ बर्ष भेल हेतैक। अण्डरपेन्टक संग फाटल गंजी पहिरने, केस अस्त-व्यस्त आ आँखिमे गरीबीक एक गोट पैघ अभिव्यक्ति नुकायल। बुझाइत छलैक जे ओ दुख आ गरीबीक एक गोट साक्षात पुतरा थिक।



'हजूर नोकरी राखबै ?'—ई ओइ छौंड़ाक आवाज छलैक। रवीन्द्रकेँ जेना केओ सूतलसँ जगा देने रहैक। ओ देखलक ओहि छौंड़ा दिस। ओ छौंड़ा निर्मिमेष दृष्टियेँ ताकि रहल छल। आस भरल अनुहारसँ रवीन्द्र दिस, रवीन्द्र। बाजल नहि। जेना बज्र-प्रहार भेलैक ओहि छौंड़ापर। ओकर धैर्यक बान्ह जेना टूटि गेलैक आ ओ कान' लागल रवीन्द्रकेँ बड़ अचम्भा लगलैक, ई किए कानि रहल अछि। प्रायः परिस्थितिक मारल थीक बेचारा। रवीन्द्र अपना कोठरीमे बैसि जाइत अछि। नाम पुछलापर ओ छौंड़ा अपन नाम जगदीश बतबैछ। तखन रवीन्द्र ओकरा अपन भेल हालतिक बारेमे पुछैत छैक।

"मालिक ! अपने की कयल जयतै जीवन-गाथा सुनिक'। बड़ करुणा छैक। अपने सन सुखी आदमी भला कोन धैर्यसँ सुनि सकतैक ओहन दुखपूर्ण कथा ?"—एकहि निसाँसमे कहि जाइछ जगदीश। मुदा ओ बेचारा की जान' गेलैक जे ओकरा आगाँमे बैसल नवयुवक सेहो ओकरे जकाँ दुखित अछि अपन जीवनसँ। ओकरामे करुण रसास्वादन करबाक जे धैर्य आब भ' गेल छैक, से कह'बला नहि। रवीन्द्र ओकरा समझाक' कहलकै जे कहू, हम जरूर सुनब। ओ छौंडा एक गोट पैघ निसास लेलक आ कह' लागल अपन जीवन-वृतान्त....

"मालिक ! हम कोनो पाइ-पाइक लेल मर'बला आदमी नइं छलिऐ। हमर बाप जुटगर छैक। हमरा परिवारमे बाप-माय, भाय-भौजाइ सब छैथ। लेकिन हमर कोइ नइं भेलै। मालिक, बिपतिमे कोइ नइं देख'बला छलै हमरा। एकबेर हम बड़ बेमार छलिऐ। देह सीकी जकाँ लक-लक करैक। बैसल तक नइं होइक मुदा हमरा आँगनक एक्को गोटे हमरा लग नइं आबै। माय छोड़ि कोइ हालोचाल नइं पुछै। माये हमर सब किछु छैक। उएह हमरा भरि आँखिसँ देखैत छलि। मुदा ओहो मजबूर छलि....मालिक ! दवाइ-दारुक लेल कोइ एकटा कैंचा नहि निकालै। अन्तमे हमरा बुझायल जे आब हम नइं बाँचब। आ हम निश्चिन्त भ' गेल रही ..."मालिक, अपन जिनगीसँ। बुझाय जे...."जे भगवान करै छै से नीके करै छै। हमहूँ तंग भ' गेल रहिऐ ओइ जिनगीसँ। मुदा भगवानकेँ हमरा आरो दुःख देबक रहैक। मालिक ! हम नइं मरलिऐ। कतेक दिन त' हमरा लागल अपन देह भरैमे। एही बीच एकटा घटना भ' गेलै जे हमरा घरसँ निकलक लेल मजबूर

क' देलक''—चुप्प भ' गेल जगदीश। बुझाइक जेना आगाँक घटना सुनयबाक हेतु साहस बटोरि रहल हो। ओकरा आँखिक कोरसँ डबडबायल नोर फाँड़ बान्हि तड़पबाक उपक्रमक' रहल छल। ओ आगाँ बाजल—"जखन हम बेमारीसँ उठल रहिऐ त' बड़ कमजोर छलिऐ मालिक। ठेंगा ल' क' चलय पड़य। तखन हमर माय गाममे एक गोटेक ओहिठामसँ दूध उठौनाक' देलकै, मुदा घरक लोकसँ चोराक'। ओकरो घरक लोकसँ बड़ डर होइत छैक। हम दूध पीअ, लगलिऐ। आ रसे-रसे हमरामे ताकत आब' लागल। आब हम नीक जकाँ चल' लागल रहिऐ मालिक! लेकिन हमर दुभग्यिसँ ई पोल खुजि गेलै जे हमरा दूध उठौना आबै छै। हमर बाप बड़े मारलकै हमरा माइके। हम ओही ठाम रहिऐ। हमरा नइं देखल गेल। हम रोक' गेलिऐ त' खजूरक सिसोहल छौंकीसँ एक छौंकी मारलक। हम त' लोहछि गेलौं मालिक। एक त' कमजोर शरीर आ दोसर छौंकीक जोरगर मारि। हम तलमलाक' गिड़ पड़लिऐ ओइठाम। हमरा पीठपर छौंकीक खोंचसँ चमरा छिला गेल रहय आ लेहू छड़-छड़ बह' लागल रहै। हम बेहोस भ' गेल रहिऐ। मुदा कोइ नइं उठयलकैक हमरा। जखन हमरा होस आयल त' हम सोचलौं जे हमरा एहिठाम कोइ नइं छै। हमरे खातिर हमर माय मारि खयने रहैक मालिक। एहीसँ भागि गेलौं हम घरसँ जे ने बाँस रहतै आ ने बँसुरी बजतै।" चुप भ' गेल ओ छौंड़ा। ओ देखा देलकै रवीन्द्रके अपन पीठपरक घाव। ओहिना काँचे छलैक। रवीन्द्रक हृदयमे हाहाकार उठि गेलैक। ओकरा आँखिमे नोर सेहो डबडबा आयल छलैक। ओकरा बुझयलैक जे ओ छौंड़ा वास्तवमे बड़ अभागा अछि। ओकर फूल सन कायापर एहि उमेरमे दुःखक पहाड़ टूटि गेल। ओ भागि आयल अपन घरसँ, नहि जानि कहिया धरिक लेल।

जगदीश उठल ओहिठामसँ। आ अनुनयपूर्ण आवाजसँ बाजल—"मालिक! नै रखबै हमरा त' हम जाइत छी दोसर दूरा।" की बजितय रवीन्द्र? ओकरा बुझयलैक जे ओकरो स्थिति एहि परिवारमे सामान्य रहितैक त' ओ जरूर ओहि छौंड़ाकेँ राखि लितैक। अपने संग रखितैक सब दिन, हर घड़ी। लेकिन··· लेकिन की करओ ओ। ओहो त' अपन परिवारमे निर्वासिते जकाँ अछि। तैओ ओ ओहि छौंड़ाकेँ समझयलकै—"जगदीश। तों घर चलि जो ओहीठाम कोनहुना रहिहें। की करबीहिक? दुनियाँ एहिना चलैत रहतै।" ओना कह'लेल कहि देने छलैक रवीन्द्र,



मुदा ओकरो जीवनक नाह त एहने स्थितिमे छैक। ओकरो मोन कहि रहल छलैक जे भागि जाइ कतहु, एही छौंड़ा जकाँ।

"नइं मालिक, नइं··· आब हम नइं जयबै। हमरा लेखे ओइठाम कोइ नइं छै आब। ओहिठाम नइं रहि सकबै, हमर जीवन दूभर भ' गेलै। आब हमरा सुख पूर्ण जिनगी जीअक कोनो आस नइं छै। सोचने रहिऐ, कमाक' धन-अर्जन करबैक आ सुखपूर्ण जीवन बितयबै, मुदा कुछ नइं भ' सकलै। सब आस चौपट भ' गेलै। ताहिसँ आब कुत्ता-बिलाइक जीवन जीक' की हेतैक मालिक? एहिना कतौ कमाइत-खटाइत मरि जयबै। कोइ नामो ने जनतै हमरा सबहक। हमरा सब संसारमे एकटा तुच्छ कीड़ा छिऐ मालिक···जकर जीवनक कोनो मोल नइं होइ छै"—आ ई कहैत सर्र-स निकलि गेल जगदीश, रवीन्द्रक कोठरीसँ। रवीन्द्र मुँह तकिते रहि गेल। ओकर गेनाइ देखि रहल छल आ बुझा रहल छलैक जेना ओकर जीवनक कोनो हमसफर ओकरा अन्तरमे संसारक बहुत रास दुख-दर्द भरि चल जा रहल हो। जगदीश चल गेल···मुदा रवीन्द्रक अन्तरमे एकगोट हलचल छोड़ि गेलैक। ओकरा बुझाइछ जे ओकर जीवन सेहो नीरस भ' गेल छै आब। मोनक लालसा मोनेमे रहि गेलैक ओकरो। ओकरो बुते आब किछु ने भ' सकतै···किछु ने।

ता बुझयलैक जे कोनो वस्तु उपरसँ निचा खसल। आ उनटिक' देखलक त' देखिते रहि गेल। ओकरा आगाँमे तड़पि रहल छलैक ओहि बगराक अधमरू काया जे किछु समय पूर्व चिचिया रहल छल। आखिर एकर जाने ल'क' छोड़लकै, सोचैछ रवीन्द्र। ओकरा ओ दृश्य नहि देखल गेलैक। ओ धम्मसँ कुर्सीपर बैसिगेल। ओकर सम्पूर्ण शरीर घामे-पसीने नहा गेल छलैक। ओकरा देहमे एक गोट अज्ञात भय सन्हिया गेलैक जे कहूँ ओकरो दुर्गति एहि अभागल बगरा सदृश नहि होइक। बुझाइछ ओकरा "सत्ते" ओकरा चारूकातसँ लुधकल लोक सब ओहिना नोचि क' खा जयतैक। आ ओ देखिते रहि जयतैक। की करतैक? ओकरो आब अपन परिवारसँ कोनो सिनेह नहि रहलैक अछि। ओहो जगदीशे जकाँ पड़ा जायत घरसँ कतहु दूर, बहुत दूर, शान्तिक खोजमे। ओ नहि रहतैक आब अइ परिवार

मे'''समाजमे । मुदा ओ मरत नहि '' एहि बगरा जकाँ ! ओकरा जीबाक छैक । ओ परिस्थितिक संग संघर्ष करत '' दुनियाँक संग संधि करत । ओकरा जे करबाक हेतैक से करतैक मुदा ओ मोफतमे एहि बेचारा अज्ञान बगरा जकाँ लोकके नोचि-नोचिक' खाय नहि देतैक । ओकरा आँखिमे नोरक कएकटा बुन्न डबडबा अयलैक आ ओकरा बुझयलैक जे ओ नोरक बुन्न ओकरा जीवन भरि संग रहबाक विश्वास द' रहल छैक''' एक गोट पैघ विश्वास । ओ देखि रहल छल ओहि मरल बगराकें जे आब शांत छल''' संसारक दुःख-दर्दकें बिसारिक' ।



## असक्क

"जय सियाराम-जय सियाराम" । थानतर रामरीझक दलानमे कीर्त्तनियाँ सभक भजन बुढ़िया कतेक देरसँ सूनि रहलि अछि । कैकबेर मोन भेलैक जे ओहो ओहि ठाम चल जाय आ भगवानक भजन सुनय, मुदा ओ अपनाकेँ असमर्थ पबैत अछि । बुढ़िया किछु दूर टघरैत अछि त' साँसे देह फक-फक कर' लगैत छैक । जाहिसँ ओ ओहिठाम नहि जा सकैत अछि । नहिएँ जा भेलैं तँ की होयतैक, ओ ओहूठामसँ सूनि सकै अछि—बुढ़िया आश्वस्त होइत अछि ।

बाप रे ! बुढ़ियापर टुटलाहा पटियाक दोगमे बैसल उड़ीस लुधकि जाइत छैक । ओ छिलमिला उठैत अछि । कतेक बेर लखनाकेँ ओ भगवानपट्टीसँ दवाइ आनि छीटि देबाले' कहने छलैक...... मुदाके सुनैए ओइ बूढ़-असक्कक बात । ककरा पलखति छैक । ओ पटियापर पड़ल-पड़ल कुहरैत अछि । ओ आब सत्ये भार भ' गेल छैक अइ अँगनापर—बुढ़िया माथ पकड़ैत अछि । भगवान बैरी भ' गेल छथि, जल्दिए उठा लितथि तँ ई दिन देख' नहि पड़ितै । हमरा सभकेँ ई चोला छुटिए गेने आब नीक ! गाममे ओकर बतरिया एक-आध आदमी मात्र बाँचल होयत, सेहो एकरे जकाँ घिघरी कटैत अछि । नहि तँ कतेक 'सरंग'मे चल गेल—मुदा हमर ई बज्जर शरीर ''''''—बुढ़िया एकटा भरिगर गारि अपना मुँहपर लाधि लैत अछि ।

बुढ़ियाक नजरि सीकापर टाँगल भातक बाटीपर जाइत छैक । भूख पुनः धधकि उठैत छैक । दिन भरि भूखले ओ पटियापर पटोटन देने अछि । क्यो अयबो ने कयलैक जकरा ओ सीकापरसँ भात उतारि देबाले' कहितैक ।

ई सभ ओकर पुतहुक किरदानी छैक— बुढ़ियाक मोन जहरतीत भ' जाइत छैक । घोकचल मुँह आर घोकचि जाइत अछि । ओ उठि बैसैत अछि । ओकरा आब खाली भूखे लागल बुझाइत छैक । सीकापर टाँगल ओ पाबि नहि सकैत अछि । आ ककरो एखन धरि आँगनमे देखि नहि पौलक अछि !

बुढ़िया अकानैत अछि……।

किछु धमधमाइत छैक। प्रायः धनिकक खेतसँ रोपिक' सभ आबि गेलै। बुढ़िया अनुमान लगबैत अछि। आशासँ हल्ला करैत अछि— घहबा छे रे, घहबा !!

बुढ़ियाक क्षीण स्वर आँगनमे चकभाउर मारि पुनः बुढ़िया लग घूमि जाइत छैक। बुढ़िया पुनः एकबेर हल्ला करैत अछि। मुदा क्यो उत्तर नहि दैत छैक। बुढ़िया पुनः एकबेर पिड़ायल मोनसँ पटियापर ओलरि जाइत अछि।

एह, बाप रे! एखन तक नहि अयलै ई सभ! की करैत होयतैक एखनि तक। कोह तँ कोनो कम दूर नहि छैक जे घर-दुआर छोड़ि एतेक निश्चितसँ बैसल जाय……। अबिते-अबिते……बुढ़िया एहिसँ आगाँ किछु नहि सोचि सकैत अछि। ओकर मोन सीकापर टाँगल बाटीक चारूकात नाच' लगैत छैक। आब आं सहाज नहिक' सकत……। भुखे अँतरी ऐंठने जा रहल छैक, की करौ— बुढ़िया गुनधुनमे पड़ि जाइत अछि।

बुढ़िया एकबेर चेहा उठैत अछि। एह, काल्हिए तँ गामक बजार छलैक। देखने छलिऐक खेलौना माइकेँ अल्हुआ किनने। राति भेलैक आ आरो तँ राखले होयतैक। बुढ़ियाक मुँह हरियर भ' उठैत छैक। जरूर होयतैक—उसनल। मुदा होयतैक कत्त' ?—बुढ़िया बिधुआ जाइत अछि। ओ कोन-कोन घरमे खोजने घुरौक। एक तँ ओ चलि नहि सकैत अछि, दोसर घर सभ बन्दोक'क' गेल छैक। बुढ़िया पुनः मोन मारिक' पड़' चाहैत अछि।

भूख सूत' नहि दैत छैक। ओ उठैत अछि। कोठीक गोरातर हथोड़िया दैत अछि। उहूँ……कहाँ छैक। बुढ़िया गुरकैत-गुरकैत कैकटा गोरा हथोड़ि लैत अछि।

……"यैह तँ छैक……" बुढ़िया खुशीसँ बेहाल भ' जाइत अछि। छोटका भौकीमे राखल अल्हुआ बुढ़ियाकेँ अमृतफल बुझाइत छैक। हब्बर-हब्बर अधखरुए सोहि मसकूरसँ पीस' लगैत अछि। ओहुना गुलगुलाक' घोंटि जाइत अछि। भौकी सुन्न भ' जाइत छैक। गुरकैत-गुरकैत बुढ़िया अपन पटियापर आबि जाइत अछि। आब मोन कनेक हल्लुक सन बुझाइत छैक।



बुढ़िया पटियापर ओलर' चाहैत अछि कि बुझाइत छैक जेना कंठ कुच-कुचाइ। हुक्काक अमल लगै' छैक। नजरि खिरबैत अछि। कनिए दूर हटिक' हुक्का आ चिलम राखल छैक। आ पीनी……? बुढ़िया पुनः सोचमे पड़ि जाइत अछि। कत' खोजौक? हँ……बखरिया कोठीके गोरातर तामामे ओ पीनी देखने छल भोरे!…… कहूँ पीने लेने होइक! ओ गुरकैत अछि। गोरातर अभ्यस्त हाथ दौड़ैत छैक। तामा भेटि जाइत छैक। पीनी तँ छैहे……बुढ़िया पीनी गोलिआक' चीलममे राखि लैत अछि। पुनः ससरैत ओसारापर अबैत अछि। चुल्हि कतौ पझा ने गेल होइक। ……बुढ़िया चिलममे लागल चुट्टासँ आगि कोड़ैत अछि। एह! आगि तँ बुझाइत छैक। दू चारिटा जीवैत गोइठाक आगि चिलममे रखैत अछि। पुनः गुरकि बिछाओनपर चल अबैत अछि। बुढ़िया एकबेर हुक्काकेँ फूकि पानि कनेक बहार क' दैत छैक आ गुरगुराब' लगैत अछि।

हुक्का पीबैत काल बुढ़ियाक नजरि बखरिया कोठीपर कयबेर चल जाइत छैक। पचास-साठि मनसँ उपरेबला छैक ई कोठी……। बुढ़िया अपना जुआनीमे एकरा बनौने रहय। बड़ कष्टसँ धन अरजने रहय बुढ़िया। गामक सभसँ नम्हर धनिकमे ओकर नाम रहैक। बुढ़िया अपन अतीतमे भसिआ जाइत अछि। कैकटा बखारी छलैक ओकरा दूरापर। जन-बनिहार, नोकर-चाकर। दरबज्जा भरल रहैक। ई बखारी आ कोठी पुरना चाउरसँ उमटाम भेल करैक। कतेक-कतेक सालक पुरान। मुदा जहियासँ एकर पुतहु घरमे अयलैक, सभ बिलाय लगलैक। खेत-पथार सभ बिकाय लगलैक। बड़का अगिलग्गीमे थानतरक बखारी सभ जड़िक' छाउर भ' गेलैक। आ ओ सब दरिद्र भ' गेल। आब बोनियोंपर आफत होइत छैक।

एहि बखरिया कोठीमे भुस्सो नहि भरि सकैत अछि ओ……। बुढ़ियाकेँ बकौर लागि जाइत छैक। आँखिमे नोर डबडबा अबैत छैक। साड़ीक आँचरसँ नोर पोछैत अछि। आ हुक्कापरसँ चिलम उतारि कनेक हटिक' अधजरुआ झाड़ि दैत छैक। हुक्काकेँ चिलमपर राखि पटियापर ओंघरा जाइत अछि।

'की भेलैक, एखन तक ककरो सबद नहि पबैत छी'—बुढ़िया अकानैत अछि। धीयापूता सभ कतहु बौआ त होयतैक—अपने सभ निफिक्किर भेल छै। केनाक' भगवान एकरा सभकेँ पारघाट लगओतैक, कहि नहि……।

बुढ़िया पटियातरमे राखल गुदरी-चेथरीक सिरमाकेँ कनेक आर अलगा लैत अछि । ओ आब पड़' चाहैत अछि । क्यो अबौक कि नहि अबौक । ओ तँ आइ पुतहुक राखल अल्हुआ जीवटक'क' खा लेलक अछि । " भरिसक ओकरे लय रखने छलैक होइक । बुढ़िया सोचैत अछि । ओहो तँ एकरा नहि खयने रहै । धुर ! कतेक मनकेँ छिछिऔलक ओ—सत्ते ओकरे ले' राखल छलैक होइक—बुढ़िया आब निश्चिन्त भ' सुतबा लेल मोन मारैत अछि ।

"जै सियाराम-जै जै सियाराम"—थानतरक छौंड़ा सभ एखनो टेरने अछि । बुढ़ियाक आँखि रामधूनि सुनैत कखन लागि जाइत छैक, ओ नहि जनैत अछि ।

जनैत अछि तखन जखन क्यो ओकरा झकझोरिक' जगबैत छैक—"ऐ ! अहाँकेँ भरि दिन खवम्मरि धयने रहैत अछि । ओतेक नीक-बेजाय भरि दिन खाइत छी तैयो ने सन्तोष होइए । देखू, ! ओनाक' लटुआले' । अल्हुआ बचाक' रखने छलिऐक से कोनाक' खा गेली । इह, ! असन्तोषी नहितन !" लखनाक मतारी आर कतेक रास बात ओकरा कहैत छै । ओ गबदी लधने रहैए । की छै सक्क जे ओ वाजओ किछु ! अभ्यस्त जकाँ चुपचाप सुनैत अछि आ करौट फेरि जी-जान जाँति गबदिया दैत अछि ।

□



# माटिक दरद

खट्टर मड़र डंटाकेँ जोरसँ तानि दहिना पयरसँ करीनकेँ जँतैत अछि । करीन पानिमे गोँता जाइत छैक । आ ओहिमे हहाक' पानि भरि जाइत छैक । तखन ओ डंटाकेँ बाम हाथसँ पकड़ि दहिन हाथसँ करीनक लोलकेँ पकड़ि ऊपर ठेलि दैछ । पानि हरहराक' आगाँमे बनल पैनमे खसि पड़ैत छैक आ भरल मुँह पानि खेत दिस ससरि जाइछ । ओ पुनः दहिना दिस एकबेर गहीँरगर आँखिसँ तकैत अछि । एह, एखन धरि सुगिया नहि आयलि अछि । दसक अमल होयतै—खट्टर अन्दाजैत अछि । आबि जयबाक चाही । रातिएसँ एत' मरल जा रहल छी, मुदा ···। माथपर आयल बहुत रास घामकेँ आङुरसँ पोछि नदीक किन्हेरमे चल जाइत अछि । माथपर बान्हल चरखानाक गमछाकेँ खोलि पंखा जकाँ घुमब' लगैत अछि । कनेक हवा अबैत छैक—'ह-ह-ह' । ओ कनेक आश्वस्त होइत अछि ।

आब ओकरा घरक चिन्ता होब' लगैत छैक । एहि ठाम तँ सभक जलखै आबि गेलै मुदा ओकर किएक नहि अयलै । ओ त' सभ व्यवस्थाक'क' आयल छल । खट्टरक मोन कनेक कालक हेतु शंकामे पड़ि जाइछ । फाँड़सँ चून-तमाकुल निकालि रगड़' लगैत अछि । ओ किए एहि झरकौआ रौदमे एत' मरैत ? नदीमे बान्ह पहिने बन्हा गेल रहितै तँ सोझे खेतमे पानि एखन खसैत रहितै । मुदा हमरा गामक लोककेँ तँ अन्तमे बुद्धि फुराइ छै । ओकर टटायल ठोरपर कनेक कालक हेतु हँसी दौड़ि जाइछ । ईहो बान्ह सभ तँ कोना ने कोना बन्हायल । बेचारा जनक सहनी, जकरा मुश्किलसँ चारि-पाँच कट्ठा जमीन छै पट'बला, से भरिदिन बेतौना बन्हने रहैत अछि एहि ले' । तीन सयबला बान्ह होइक वा मझकोठिया का नहरिसँ पैनि खुनयबाक होइक, ओ सभसँ गारि सुनैत खुशामद करैत रहैत अछि । अढाइ-तीन सय विघा जमीन पट'बला ले' ओ चरिकठिया अनेरे बेहाल रहैत अछि—एकटा बड़का छिट्टा लेने, पत्ती असुलैत । ओकरा ओहि मरदेपर हँसी लगैत छैक । ओकरो ताजबरदस्ती बान्हपर ओहि दिन लैये गेलै ।

बान्हे-पैन की करतै। इन्नरे भगवान रीझत तँ दू धार पानि····नहि तँ··। आ ताहूमे जुलुम होइ छै। बाँकी देब' जाउ तँ पानि-पोत चाहबे करी। चाहे खेत पटौ वा नहि। ओकरा ओस्तासँ मतलव। गिरहत जनकपुर ढोगैत-दोगैत तंग भ' गेल। ई हरदीनाथ हमरा सभक हेतु कोनो लाभकारी नहि। बरू एखन एकरा रहने पटौ—पानि-पोत दीही पड़ैत छैक। के सूनत ?

खट्टरक नजरि पुनः एकबेर दक्षिण दिस उठैत छैक। दुखरन ककाक पोखरि धरि नजरि गोट-गोटक' समाङके तलाशैत छैक। मुदा सुन्न देखि मुँह बिचका हाथपर राखल खैनीकें झाड़ि चुटकीसँ ठोरक गहमे राखि लैत अछि।

भूख बड़ जोर लागल छैक। कैक दिनसँ नीक जकाँ खाइयो ने सकल अछि ओ। अरुचि जकाँ भ' गेल छै ओकरा। ओना आन साल समयपर बरखा भ' जाइत छलैक। लोक धान कमैनी करैत छल, रबी-राइ छिटैत छल। मोनसँ काज करैत छल, मोनसँ खाइत छल। अरूचि भेलापर चचरी कोयना खेतमे लगा किछु ने किछु माछ मारि लैत छल। आ ओहि संगे तँ रोटी खाइते बनैत छलै। मड़ुआके रोटी, पोठी मछरिया। मुदा एहि बेर सभ 'लक्षत्र' जेना बाँझ भ' गेलै। एक्को बुन्न पानि नहि पड़लै। धान जरैत छैक। गरै-गरचुन्नीक बाते कोन, डेढ़बा-पोठी के देखब दुर्लभ भ' गेलै। बजारमे तँ युग उनटै छै। छोटकी माछ आठ रुपैए सेर। के खाय ?

ओकरा बुझयलै जे आब ओ पुनः नहि उठि सकत। चानी फोड़ने जाइत रौद आ पेटमे अन्नक लसेरो नहि। ओ खसि पड़त आब। खट्टर सोचैत अछि। एखन ओ गिरहतमे रहैत तँ कीमेँ की बाजि गेल रहैत। टैमपर जलखै नै भेटतै तँ हमसभ की काम करबै। हमसभ आदमी छी कि बड़द। एहिना होइ छै जनक कमयनाइ। पिरायल मोने गिरहतकें फज्झति करितै—मुदा ····।

खट्टर हाथक गमछाकें ओहि नवगछुलीक छाहरिमे बिछा ओतहि ओलरि जाइत अछि। मुदा ओ सुतैत नहि अछि। ओकरा मगजमे बहुत रास बात अपने मने आब' लगैत छैक। पचास-पचपनक उमेर छै ओकरा। बहुत किछु रंग-हवा ओ देखलक अछि आइ धरि। सातम सालक रौदी, एगारहम सालक रौदी। सभ



ओ भोगने अछि, मुदा ओ ओकरा एतेक नहि मोन दुखयलकै। ओकरा बुझाइ छै जेना आजुक समयमे बरक्कति नहि छैक। कतबो कमाइत अछि, पेट नहि भरैत छैक। पाँच कट्ठा खेतमे धीयो-पूताकेँ नहि पालि पबैत अछि ओ मेहनते कयने की होइत छै।

उपजो तँ कोनो खास नै होइ छै—खटटर गुनैत अछि। एतेकटाक परिवार आ कम उपजा, खयनाइयो ने पुरैत छैक। बीच-बीचमे ओ जनोमे चल जाइत अछि, सेहो सभ गोटे चाटि जाइत अछि। पुरान करजा ओ एखन धरि चुका नहि सकल अछि। फेर, ओहि दिन मनमोहनबाली मालिकसँ एक मन धान भाड़ि आन' कहने छलीह। अनठा देल। कतेक तीरौ वर्खसवाइ। एहिना किछु दिन खेपि लेत। फेर देखल जयतै। छठि एखन आबिए रहल छै—ओहिमे नहि लेने कोनो परकार नहि—खट्टर माथ डोलबैत अछि। मुदा चोट्टे ओकरा बुझाइ छै जेना एकटा मेंही लोलबला सूइ अँतरीमे क्यो भोँकि देलकैक, जकर पीड़ा सौंसे पेटकेँ उनटौने जाइत होइक। ओ पेटकेँ दबा पेटकुनियाँ दैत अछि। कनेक कालक बाद ओकरा ठीक बुझाइत छैक। ओ खूब नीक जकाँ जनैत अछि, ई भुक्खे भेलैक अछि। मुदा आब ओकरा गाम दिस तकबाक साहस नहि होइत छैक। ओ आब कनेक आँखि मून' चाहैत अछि।

कतेक नेंहोरा-मिनतीक'क' गूजन झासँ ओ ई करीन मंगलक अछि। ताहूमे गोरा-छीप, डंटा, लतमारा सभ जोड़बामे आँचर-पाँजर ढील भ' गेलै। सभ तँ आनेसँ माँग' पड़ैत छैक। किछु दिन ढोससँ उपछलक। मुदा ओहिसँ की होउ। पानिक कोन ठेकान। इएह नदी आइ भरल छैक, काल्हि सुखा जयतै। पचासो करीन ठेकायल अछि आ से रातिएसँ। ओहो भिनसरबेमे आयल। ओकरा विश्वास छै जे ओ एको घड़ी आइ आरो चला लेत तँ ओकर खेत पटिए जेतै। तखन किछु आशा छलै।

जनोमे आइ नहि गेल ओ एहि पटौनीक चलते। मालिक पितायले होयतै। मुदा तै सँ की ओ अपन काज छोड़ि देअओ ? खट्टरक मुँह जेना बिचकि जाइत छैक। भरि साल तँ ओ कमाइते रहैत अछि अनकेमे। किछु ओ दिन तँ अपन खेतमे

खटओ। आइ-काल्हि गिरहत सभक कोन ठेकान। कनेको 'डिपाइट' भेल कि पुछबो नै करैत छैक। तखन इएह खेत छै जे एको साँझ पेट भरैत अछि। खेत ओकर जीवन छै—माय-बाप छै। एतेक दिन जँ खेपि लेलक तँ आबहु कोहुनाक' खेपिए लेत की। बिसवास रहल ताकै !

ठीके बिसवास बड़ भारी 'बौस' छै। भूमीसुधार अयलैक तँ लोक बाप-बापक' धनीकक खेत मोहियानी लिखा लेलक। कतेक ठाम तँ बटैया नहियो रहने लिखा देलकै। ओकरो खेत ला लोकसभ की कम तंग-पीठ देने रहैक— हाय लरायण लिखाइए ले। मुदा ओ टससँ मस नहि भेल। मालिकपर बिसवास रखने रहल। अपन चारिये-पाँच कट्टा ठीक छैक। अनकापर कोन लोभ ? लोक लड़ल, अखरपना कयलक आ ओ निचैनसँ खेत जोतैत रहल। लोक सभ बरू ओकरा बुड़िबके कहौ। से बुड़िबको बनि ओ चारिटा धीया-पूताकेँ गुजर-गुजरान चलबैत त' अयलै आइ धरि। आ ओही ठाम जीबछ कापैड़केँ की हाल भेलै से गौँआ नहि देखलकै ? धनिकसँ अखरपना करैत घर-घराड़ी सभ बिला गेलै। धनिककेँ की भेलै। बिलटि गेल बिचारे गरीब।

'बिलटब' शब्द खट्टरक देह घुरघुरा दैत छैक। एह, ओहो आइ लोकक बात कयने रहैत तँ नहि जानि आइ केहन हालतमे रहैत। धीया-पूता बिलटि जैतैक। एतेकमे तँ ई हाल। सभ भगवानक लीला छै।

खट्टरकेँ भगवान मोन पड़िते आँखिक आगाँ जुआन बेटी सुगिआक निश्छल, कचाह, निर्दोष अनुहार नाचि उठैत छैक। साँचे, कखनो-काल भगवानो हृदक' दैत छथि। कतेक मेहनतसँ बियाह कयलक बेटीकेँ। मुदा भगवानकेँ ओकर सुख मंजूर नहि छलै। बड़ धराहक घरमे बियाहि देलक बेटीकेँ। पौस मङने रहै, मड़बापर। गरजे मानि लेने रहैक। सामर्थ्यहीन। परुकाँ एहि बात ल' क' खटपट भ' गेलै आ आइ ओकरा बेटीकेँ छोड़ देने छै। कोनाक' ओ अपने मने पहुँचा अबीक। गरीब भेल तँ ओ इज्जतियो गमा लेलक। नहि, एतेक भार छैहे, एकटा आर !

आब खट्टर आर सोचि नहि सकत। भूखे पेटमे पुनः मरोड़ देब' लगैत



छैक। नहि जानि की भ' गेलै। इसर, लखना, महन्था सभ तँ घरेमे मरैत होतै। अपन हूरि लेने होत आ हम एब' छटपटा रहल छी !'—खट्टर तँ दगधल मोने बेटाकेँ बात-कहिनी कहै छै।

नहि जानि, कखन ओकरा आँखि लागि गेलै। जखन "बाउ हौ, बाउ !"क आवाज ओ सुनलक तँ धड़फराक' उठल। मोन भेलै, गीड़ि जाइ उठब'बलाकेँ, मुदा आगाँमे सुगियाकेँ देखि मोन मारि लैत अछि। सुगिया बाम हाथसँ पकड़ल रोटी खट्टरकेँ पकड़ा दहिन हाथक लोटा आगाँमे राखि दैत छैक। आ चुपचाप एक कातमे बैसि रहैत अछि। खट्टर नमहर-नमहर रोटीक खण्ड तोड़ि नोनक संग अविचलित गिड़ने जाइत अछि।



# मनःस्थितिक दंश

निसबद्ध रातिमे क्यो फटक हड़बड़बै छैक। बहुरियाक कचाह निन्न टुटि जाइत छैक। एखने कनेक काल पूर्व तँ ओ सूति सकल छल। अयना छौ माससँ ऊपर भेल होयतैक, मुदा घरबला एखन धरि नीक जकाँ दू-चारियो राति सूति नै सकल छै। कहांदन सिकरेटीमे कमाइत छैक। से डिपटी के कोनो ठेकान नै। रातियो-बिराति होइत छैक। आइ-कालिह त' सुकुर छैक—शनिक' घरेपर रहैत देखल करैत आयल छै। से कालिह ओ जरूरे रहतैक। तखन कल्हुका राति··· ! एहने सन कल्पनाक संग ओ गुनधुन करैत रहलीह। आ किछुए काल पूर्व सूतल छलीह कि फटक खड़खड़ाइत छैक।

ओ चौंकि उठैत अछि। की आइ सिकरेटी नै गेलै ? बहुरिया बिचारैछ—नै, मायकें त' कैक बेर कहने रहैक जे 'खायक बान्हि दे, जनकपुरेमे हम खायब। तखन जरूर गेल होतै।

बहुरियाक सौंसे देह घमा जाइत छैक। कातिक-अगहनक जड़ाओन मासमे बहुरिया जेठ-बैसाखक अनुभव करैत अछि। ओकरा किछु नै फुराइत छै—"ई के हय ?"

'दूत, ओहे होतै।' बहुरियाकें जेना मोन पड़ैत छैक। 'आइ सुक्कर हइ किने। आ सुक्कर के सिकरेटी अदहे होइत छै। आ कैकटा संगी-साथी रहै हइ आब'बला, से चलि आयल होतै।'—बहुरियाक सौंसे देह गुदगुदा जाइत छैक।

मुदा पुनः बहुरियाक मोन गुनधुन कर' लगैत छैक। 'एतेक रातिक' त' कोनो सुक्कर के नहि आयल हइ—आइए कैला अयतै ! दिन कराक' लयला छौ माससँ ऊपर भेल होतै, मुदा घरबला संग निचैनसँ सुतबाक इच्छा मोनेमे रहि गेल छै। देखैत अछि एम्हर, तँ टरि जाइत अछि ओम्हर। दुत्, एहन कमजोर लोक एतेक रातिक' नहि आबि सकैत हइ। तखनी ?'



बहुरिया सर्द भ' जाइत छैक। फटक आब खूजि चुकल छैक। अन्हरिया रातिमे एकटा आकृति मात्र मुहारपर देखैत अछि। फटक पुनः बन्द भ' जाइत छैक। आकृति चिन्हब ओकरा हेतु असंभव छै। घरोबला तँ एहिना चोराक' अबैत छैक। अपने फटक खोलैत छैक आ चुप्पे राति बिता अन्हरोखे घुरि जाइत छैक। माय-बापक लाजे ओ सोझसँ सुतियो ने सकैत अछि।

घरो पूरा अन्हार छैक। डिबियो नहि जानि कखन मिझा गेलै। ओ त' बारिक' सूतल छल। तेले घटि गेल होतै। बहुरियाकें ई अन्हार आर डेरा दैत छै। लया-लया आयलि हइ। घरोबलाकें ठीकसँ ठेकानि नै सकल छै। फेर की करओ ?

किछु नै फुराइ छै ओकरा। आकृति ओकरा हथोरैत-हथोरैत लगमे आबि जाइत छै। बहुरियाक छाती भाथी जकाँ हौंकाय लगैत छै। आकृतिकें ओ नीक जकाँ ठेकानैत अछि—ई निश्चय ओकर घरबला नहि छै। ओकर त' एहिसँ पातर काया छै। ई त' कनेक खरगर आ मोटो बुझाइत अछि।

कहुँ ! नै-नै, ई कोना भ' सकै छै। ऊ नै हइ। छीः। की-की सोचि लेलक ऊ। मुदा जे होय, आन मरदाबा त' जरूरे हइ। बाप रे, आइ ओकर धरम भरस्ट हो रहल छै, आ ऊ चुप हइ ! नै, हल्ला कर' पड़तै। सोर कयने आइ सत्त चल जायत। बहुरियाक छाती भाथी जकाँ उपर-नीचा करैत छैक।

ओकरा मोन करै छै जे ओ आब चिचिया उठय—'दौग' हो, घरमे कोइ पैसल हय !' मुदा आवाज जेना गरदनिमे फँसिक' रहि जाइत छैक।

ओहि आकृतिक हाथ ओकरा देहसँ भीड़ैत छैक। ओ सिहरि जाइत अछि। ओ चिचिया नै सकल त' अनठाक' सूति रहब नीक बुझैत अछि। जे होतै, देखल जयतै।

पटियापर आकृति बैसि जाइत छैक। ओकर दहिन हाथ देहकें हिलबैत छैक—कतहु जागल त' नहि अछि ! मुदा बहुरिया आर अन्ठा दैत अछि—मरल मुर्दा जकाँ।

बाम हाथ ओकरा गालपर ससरैत छैक आ दहिन हाथ पयर दिसि बढ़ैत छैक।

बहुरियाक अन्तर फेर एकबेर हाहाकारक' उठैत छैक—नै-नै, ई अधरम छै। परपुरुख संगे सुतब बड़का पाप छै। माय एकबेर बाजल रहै। ओ नै कर' देतै किछु। आब चिकरहीं पड़तैक– के हय? भाग एत'सँ,। मुदा पुनः काँट जेना गरदनिएमे अटकि जाइत छै।

आकृति ओकर सम्पूर्ण शरीरकें हँसोथैत छैक। आ, आ देह उघारि दैत छैक। ओकर भय आब सनसनाहटिमे बदलि जाइत छैक। सौंसे देहमे एकटा सुरसुरी घुरघुराय लागल छैक।

बेनगन शरीरपर आकृतिक हाथकें चलब ओकरा बड़ नीक लाग' लगैत छैक। दू-तीनबेर घरोबला ओकरा संगे सुतल छैक। अबै छै, बगलमे सूति रहैत छै। ओ मलियामे राखल तेल ल' क' सौंदे देह ससारि देल करैत छै आ तखन ओ गाय-महीस जकाँ····!

अइ मरदाबाक हथोरिया बड़ नीक लगैत छै। ओकरा इच्छा होइत छै, ई मरदाबा एहिना करैत रहितै त' नीक! मुदा से मुँहझौंसा बेसीकाल नै करै छै। ओ फानिक' देहपर चढ़ि जाइत छै। ओ शांत पड़ल रहैत अछि! मुँहसँ एकोटा शब्द बहरायब ओकरा जागले हेबाक संकेत हेतैक, तें ओ आर अनठाक' पड़ल रहैत अछि, निढाल भ' जाइत अछि।

"हे बहुरिया! बहुरिया!"—बाहरसँ क्यो सोर पाड़ैत छैक। बहुरिया घबराक' उठैत अछि। बात ठेकनबैत अछि। ई सासुक आबाज छैक। नजरि फटकपर चलि जाइत छैक। फटकक दोग द' क' किरिनक इजोत घरमे पैसि रहल छै। मने दिन उठि गेल छैक।

'दिनमे कहुँ···!—एकटा अज्ञात भयस बहुरियाक देह एकबेर आर सिहरि गेलै। तथापि ओ उठैत अछि—इस्स···! देह टूटल जाइत छै।

ओ फाटक खोलैत अछि।—"एह, एखन धरि सुतले रहतै। घर-दुआर बहार'के बेर टरल जाइत छैक। ओहो छौंड़ा आब अबिते होतै। जलखइ बनाब'के छै। जा, जल्दी कर!"—सासुक अढ़ाओन ओ मोनभरि सुनि लैत अछि। आ बाड़ीमे जाइत अछि तथा बाढ़नि ल' आँगन बहार' लगैत अछि।



बहारैत काल ओ आंगनमे सभक मुँह तकबाक चेष्टा करैत अछि। क्यो किछु बूझि त' ने सकल अछि! मनचोर जी उड़ौने छैक। छोटका देओर, ननदि, माइ दाइ सभ अपनेमे बेहाल देखि पड़ैत छैक। ओ कनेक आस्वस्त होइत अछि। बुझाइत छै क्यो ने बुझि सकल अछि।

ता ओकर नजरि ससुरपर पड़ैत छैक। सौंसे देह जेना सिहरि जाइ छै। रतुका मनसाक चित्र दिमागमे नाचि जाइ छै—नम्हरका काया, भरल देह। कहुँ! नै नै, फेर ओ की सोच' चाहैत अछि। एना कतहु होइक! टोल के कोनो मुँहझौंसा छल होतै। ओ आब ककरो दिस तकबाक साहस नै क' पबैत अछि। हाथमे बाढ़नि पकड़ने हबर-हबर आँगनमे चलब' लगैत छैक।

थरिया-बासन छोटकी ननदि माँजि अनने छैक। ओ आँच पजारैत अछि। गहुँमक चिक्कसकें सानि रोटी बनबैत अछि। बाहर बाबूक आबाज ओ सुनैत अछि—जो जलखइ क' ले ग', तैयार छौ!

ओकर करेज जेना धकसँ रहि जाइत छैक। मने ओ आबि गेलै! केनाक' ओ ओकरा आगाँ जायत? कहुँ ऊ बूझि ने लै! नै, हम बड़ अधरम कयलिऐ, एना नै करक चाही। साँचे हम·········!

आंगनमे घरबलाकें आयल देखि ओ उठैत अछि। आ पूब मुँहक घरक ओसारापर पीढ़ी राखि दैत छैक। घैलसँ पानि ढ़ारि लोटा हाथमे पकड़ा दैत छैक आ छीपामे नून, मिरचाइ, तेल, पिआउज राखि रोटी आँगनमे ध' दैत छैक। थारी आगाँमे राखि कातमे ठाढ़ भ' अपन थाकल घरबलाकें निहार' लगैत अछि। सिकरेटीमे कमाइत-कमाइत हड्डी निकलि गेल छैक। बच्चेसँ घर-दुआर के चिन्तामे बेहाल रहल करैत अछि। बाप एहन नोकरी करै छै जे रने-बने बौआयल करैत छै। आ ई···जुआनिमे बूढ़ भेल जाइत छै। बुझाइ छै जेना देहमे दमे ने होइ। आ ओकरा राति मोन पड़ैत छै। ओ पुनः चौंकि जाइत अछि। ओ कहुँ··· ! नै, नै बुझतै। एकबेर बहिन कहने रहै– जनानी के ई सब भेलो पर नै बुझाइ छै! ओ आस्वस्त होइत घरबलाक खायल थारी उठा बाड़ीमे माँज' चल जाइत अछि।

दिन भरि काज करैत बहुरियाक मोन थिर नहि भ' पबैत छैक। कहू बुझि गेलै त' की कहतै लोक!

ससुर बाहर कमाइत छैक। साले-बरीसे अबैत छैक। कतेक इच्छासँ अपन बेटा के बिआह कयने रहै। बाजल रहै—कुलके राख'बाली पुतहु अछि हमर। से जँ ई बुझि गेलै तँ ओ की सोचत? केहन बिगड़ल आदमी के ल' अनली। नँ, हम विष खाक' मरि जयबै लेकिन बुझ' नै देबै। बहुरिया कोन्टामे ठाढ़ि भेल इएह सभ सोचल करैत अछि आ सोचि-सोचि अहुरिया काटल करैत अछि।

आइ शनि हइ, रहबे करतै। कहूँ सुत'काल बुझि ने लै! बापरे! फेर ओकर देह सिहरि उठैत छैक।

"फेर जेबही आइयो कइला?" माइक प्रश्नक उत्तरमे ओकर आबाज ओ सुनैत अछि—"ओ० टी० छइ।"

ओ नै बुझैत अछि जे ओ० टी० माने की होइत छैक। मुदा ओ जयतैक से निश्चय भ' जाइत छैक। ओ कनेक निश्चित भ' जाइत अछि—आइ राति त' टरल।

आइ सबेरे खा-पीबिक' सूति रह' चाहैत अछि। देह टूटि रहल छैक। से दीओ जानिक' नहि बारैत अछि। टूटल देहक पीड़ासँ निन्न लगले आबि जाइत छैक। मुदा रातुक कोनो पहरमे ओ फेर ककरो देहक भार महसूस करैत अछि। मुदा आइ ओकरा आँखियो खोलबाक मोन नै होइत छैक। एकटा नव ढंगक आनन्दक संग दर्दकेँ पीबि निश्चेष्ट पड़ल रहैत अछि।

क्रम एहने सन चल' लगलैक। प्रत्येक राति पतिक नहियों रहलापर पतिक संसर्गक सुख भोग' लागल। कृशकाय कायाक आगाँ भरल देहक सुखानुभूति ओकरा लेल चरमसुखक आधार भ' गेलैक।

ओ आइ धरि ई नहि बूझि सकल अछि जे के ओकरा संगे ओना करैत आबि रहलैक अछि। कहियोकाल उत्सुकतासँ आकृतिकेँ देखबाक मोन करैक जे के अछि आखिर! मुदा चोट्टे सम्हरि जाय। जँ शंका ठीके भेलैक तँ? तखन कोनाक' की करत। आइ धरि पबैत आयल स्वर्गानुभूति आत्मग्लानिमे बदलि जयतैक।



ओकर तिरपित मोन आर बौआ जयतैक। नँ, ओ किएक देखत ककरो मुँह! आ तेँ बहुरिया डिबिया मिझा अन्हार घरमे जानिक' आँखि मूनि पड़ल रहैत अछि।

एकदिन भोरेसँ सासुक कननाइ ओ सुनैत अछि। फटक खोलि ओ आँगन बहारैत काल सासुक कानबपर अचरजमे डुबल जाइत अछि। जुआन बेटा-पुतहुकेँ आगाँ एना कानब! की अर्थ भ' सकैछ? ओकरा ने चुप करबाक साहस होइत छैक आ ने पुछबाक। ओ आंगन बहार' लगैत अछि। सासुबला घरसँ पितायल ससुरकेँ निकलैत ओ देखने रहैक, से सासुकेँ ससुरे मारने हेतैक, ई बात बुझबामे भाङठ नहि रहलैक। मुदा किए मारलकै से कोना पुछौ! ककरासँ पुछौ!

दिन भरि सबकेँ सभसँ तनातनी रहैक। खयनाइ-पिनाइ बन्न। ओ कय बेर सासु के खाय लेल कह' गेल रहै मुदा ओ एकरा दिस गुम्हरिक' ताकि हाथ झटकि देने रहैक। तखन सँ ओकरा जाय के साहस नै भेल रहै। दिनभरि ओहो भुखले रहल। घरबला ओहिना सिकरेटी चल गेलै—खालिए। बात बुझ'मे एखन तक नहि आयल रहै।

साँझखन बाहर-भीतरमे अबैतकाल सरंचिया काकीक ठाट लग अबैत-अबैत ओ ठमकि जाइत अछि। अन्हार छै—से क्यो देखि नहि पबैत छैक। भीतर आंगनमे दू-तीनटा मौगी ओकरे ससुरक नाम ध'क' किछु बाजि रहल छलै। ओ कान टाटसँ अड़ा दैत छैक।

"किसनमा हाकिम भेल ग' त' गाम बिनायत! छी-छी।"—सरंचिया काकीक स्वर बहुरिया स्पष्ट चिन्हैत छैक।

"से की भेलै काकी?"—कोनो जुआन मौगी टोकैत छैक।

"देखलहीं नहि, चिकनाबाली के देह फोरने छै! की, ओ कोनो साँइ-बहु के झगड़ा हइ?"—सरंचिया बुढ़िआक रहस्यमय स्वर अभरै छै।

"तखन?"—जुआनि स्वरक उत्सुकता स्पष्ट अछि।

बहुरिया कनेक आर टाट लग ससरि जाइत अछि। ओकर साँसे देह जेना थरथरा रहल छैक—नहि जानि की बजतैक!

"हमरा त' चिकनाबाली कय दिनस' कहैत अछि जे मरदावा भकठि गेल बुझाइ छै । इज्जत-प्रतिष्ठा के कोनो खेयाल नहि हइ !'—सरंचियाक स्वर।

"से की माने ?"—कोनो दोसर आतुर स्वर।

"रातिमे उठिक' ओ कय दिनसं कतहु चल जाइत छैक। एकबेर पुछबो कयलकै से चुप्पे छल। मुदा आइ आति त' अपन दीठसँ देखि लेलकै !"—रहस्यसँ परदा उठबैत बजैत अछि सरंचिया।

"की देखलकै काकी ?"—उत्सुकता आ रोमांचसँ भरल स्वर बहुरियाक कानसँ टकराइत छै।

"आइ राति बिछाओनपर जखन नै देखलकै किसुनमा के त' चिकनाबाली केबाड़ अलगा आंगनमे आब' चाहलक, कि ओ किसुनमा के चोर जकाँ बहुरियाक घरसँ बहराइत देखि लेलकै। से नै रहल गेलै—पूछि देलकै। ताहिपर देह धुनि देलकै बेचारी के ! ह', एहन चंठ लोक नै देखने छल। जुग उनटि गेल। बेटाकें कमाइत-कमाइत हड्डी खिआ गेलै आ ओकर बहु ल' क' बाप मौज करै छै ! हे भगवान !"—सरंचियाक स्वरक संग आन मौगी सभक आश्चर्यमिश्रित चीत्कार बहुरिया सुनैत अछि।

से सुनि टाट लागल बहुरिया एकबेर त' ओतहि खस' चाहैत अछि। आकि टाटकें आर मजबूतीसँ पकड़ि लैत अछि।

मने आइ धरि ओकरा घरमे आब'बला ओकर ससुरे छलै ! ओकर अनुमान गलत नै रहै। आ बहुरियाक आगाँ रातुक चित्र नाचि उठै छै।

आकृति अपन मुँह बहुरियाक मुँहपर राखि देने रहै। अन्ठाक' पड़लि बहुरियाकें भभाक' महकल रहैक दारू। दाढ़ीक खुट्टी सौंसे मुँहमे सुइया जकाँ गड़ल रहैक आ से सहाजक' सुतलि रहि गेल रहय। मुदा दिमागमे एकटा बात फेर मड़राय लागल रहै—दिनमे ओ अपन ससुरकें माछक संग दारू पिबैत देखने रहैक आ देखने रहैक खुटिआयल दाढ़ी सेहो। मुदा फेर वएह बात—नै, ऊ नै भ' सकै छै। आ सुति रहल रहय। से आइ बात खुजिए गेलै—वएह रहय आइधरि।



दिनक क्रम एहिना बितैत गेलै। एहि बीच ओकर ससुर कयबेर काजपर गेलैक, कय बेर अयलैक। आ जते बेर अबैक, मौका निकालि ओकर कोठलीमे सूतल करैक। ओहो आँखि मुनि अभ्यस्त मनःस्थितिकें परतारल करय।

आइ डेढ़ वर्ष सासुर बसलाक बाद बहुरिया अपन कोरामे चिहुँकैत नेनाक अनुहार बापसँ वा बाबासँ मिलयबाक जरूरति नै अनुभव करैत अछि। नेनाकें भरि पाँज समेटि छातीसँ सटा, मनःस्थितिमे उपजैत पीड़ाकें मेटयबाक प्रयत्न करैत पड़लि रहैत अछि।



# टीस

गीता दसम कक्षाक छात्रा छथि । हुनका एना बुझाइत छनि जे एहि साल ओ अबस्से फ़ेल भ' जयतीह । ओ पढ़ैत नहि छथि से बात नहि, ओ पाढ़ नहि पबैत छथि । स्कूल जयबासँ पूर्व भोरे उठिक' चाह-जलखइ बनायब, नहायब, अपने पनपियाइ करब आ तखन स्कूल जायब । बीचेमे आबि खयनाइ खायब । फेर स्कूल सँ अयलाक बाद घरक काजमे अपनाकेँ झोंकि देब ।

चारि बजेक बाद चूल्ही जड़ायब, चाह बनायब । जलखइ बना, छोट भाय-बहीनकेँ जलख : करायब । साँझमे भोजन बनायब । आ भानस कयलाक बाद बचल समयमे अपन पाठ्य-पुस्तककेँ उनटायब । ओकरा उनटयबे कहब उचित होयत । एहि चंचलतामे ओ किछु खास पढ़ि नहि पबैत अछि । नहि जानि कखन केओ खयबा ले' कहि देअय । बस, इएह छैक ओकर जिनगी ।

गीता एतेक काजक बोझसँ लदायलि छथि त' एकर माने ई नहि जे घरमे ओ एसकरे छथि । छोट भाय-बहिन छैक, जेठ बहिनक संगहि माय-बाप सेहो छथिन । नोकरो छैक घरमे । मुदा·· ····घरक काज हिनके कर' पड़ैत छनि । बाप-मायक धारणा छैक—बेटी जुआन भ' रहलीह अछि, घरक काज कहिया सिखतीह ! तेँ सीखब जरूरी । पढ़ाइ से बात मानतै नहि तेँ । मास्टर साहेब कैक बेर हुनका माय-बापकेँ कहि चुकल छथिन जे जँ एहिना गीता काज करैत रहतीह, पढ़ाइमे लड्डू अनतीह । आरो लोक त' अछि ई सब कर'बला ! माय-बाबू आश्वासनो दैत छथिन—'ठीक छै, आब एहि बातक खियाल राखल जायत ।'

मुदा गीता बुझैत छथि जे ई सभ एकटा आश्वासनक बात थीक । एहने सन ओ कैक बेर बाजि चुकल छथि । ओहो सूनि चुकलि छथि । तथापि काज ओकरे करय पड़ैत छैक —ओ क' रहलीह अछि ।

कैकबेर तँ माँ कहैत छथिन—'छोड़ ई पढ़ब । की होयतैक पढ़िक' !



फेर ।' तखन ओकर हृदय कानि उठैत छैक । किएक त' ओ जनैत अछि, मायक एहि कथनमे कतेक दर्द नुकायल छैक !

की होयतैक पढ़िक' ? जत्त'सँ ओ आयलि अछि, जाहि सामाजिक वातावरणक ओ फसिल अछि, ओहि ठामक लोकक हेतु बेटीक पढ़ब, नहि पढ़ब—कोनो माने नै रखैत छैक । ओकरा त' काजक हेतु एकटा मशीन चाही । चप्पल-साड़ीमे लेपटायलि कोनो मेमसाहेब नहि । ई सोचिते आगांमे नाचि उठैत छैक अपन बड़की बहीनक क्लान्त अनुहार । एहि परिवेशक कुपरिणाम भोगि रहलीह अछि बेचारी····

आ कहियो काल सोचि उठैत छथि ओहो—ठीके, की होयतैक पढ़िक' ! पुन: हुनका अपन संगी सभक अनुहार मोन पड़ि जाइत छनि । की-की आकांक्षाक संग ओ सभ पढ़ैत अछि । क्यो डाक्टर बनती, क्यो ओकील बनती, क्यो नर्स, तँ क्यो शिक्षिका । क्यो आइ धरि ई नहि बजली जे ओ पढ़िक' मात्र पत्नी बनतीह ।

तँ की ओ मात्र पत्नी बनबा ले' ओ पढ़ैत छथि ? नहि, ओहो किछु बनि सकैत छथि । पत्नी त' बादक बात भेल । पहिने ओ किछु बनती अथवा बनबायोग्य अपनाकें बनौती । बस, ओ विवाह नहि करती । किएक त' विवाहक कुपरिणामसँ ओ कुपित छथि । हुनका आब डर होब' लागल छनि । आ तेँ अपन मायसँ ओ कैक बेर कहि चुकल छथि जे ओ विवाह नहि करतीह । ओ पढ़तीह, किछु बनबा ले' आ पढ़बा ले' । घरक काजो करब जरूरी । ओ बुझैत छथि—नहि करबाक स्थितिमे हुनका कतहु बान्हि देल जा सकैत छनि । माय-बाप त' कर्त्तव्यक इतिश्री बूझि छुटी पाबि लेथिन— मुदा ओ ? नहि, ओ सभ किछु करती- पढ़बा लेल ।

आ, तखन हुनका सदैव गारिसँ झपने रहैत अपन बड़की दीदीक बातो गरैत नै छनि । ओ ओकरो सहती । हुनका त' कोनो प्रकारे रहबाक छनि—सभ किछु सहियोक' ।

ठीके, सभ किछु सहिएक' त' ओ रहैत अयलीह अछि । स्कूलक छात्रा सभक भेष-भूषा हुनका हीनतासँ ग्रसितक' देल करैत छनि । ओ सोचैत छथि– आह, ओहो ओकरे सभ सन बेलबटम, लुंगी-कुर्त्ता आ नहि जानि की-की पहिरतीह ! मुदा चोट्टे ओ सम्हरि जाइत छथि । आ, तखन हुनका ओ बात ओतेक नहि सालैत छनि । ओ बूझैत छथि अपन ओकाइत । जत'स' ओ आयलि छथि, ओत' एहिस' बड़

छोट परिवेश छैक। ओत' ने एना बॉलर्स जगमगाइत शहर छैक, ने ई अलकतरासँ पोतायल पक्की सड़क छै, ने कोनो सिनेमाहाल छै आ ने कोनो फैशनक प्रतिस्पर्धा। मात्र एकटा सोझ, स्वच्छ ग्रामीण वातावरण। अपनेमे समटल व्यक्तित्व-परिवेश।

ओ सभ तँ गामक परिवेशसँ निकलि एहि खुजल वातावरणमे आबि सकल अछि अपना बापक चलते, जे गामसँ स्कूली शिक्षाक बाद भागिक' एत' नोकरी कर' लागल रहथि। एत' गामक नालीमे रहनिहार जीवकेँ स्वच्छता देयौलनि, नव दुनियामे जीवक प्रेरणा देलनि। आ, आ इएह किरायाक घर हुनका सभक सभ किछु छनि। अपन घर बूझ' लागल छथि सभ क्यो एकरा। गाम बिसरि गेल अछि सभ। सभ किछु बदलि गेल सन लगैत छनि— मुदा ओ ई नहि बिसरि सकल अछि जे एकटा अदना परिवारक बेटी छथि। जएह छनि हुनका लग सएह सन्तोषक बात। तखन हुनका साधारण सन सूती पहिरब खुशी प्रदान करैत छनि। हल्लुक लगैत छनि हुनक शरीर।

ओ छथियो बड़ अन्तर्मुखी किसीमक लोक। पप्पू, हुनक संगी, इएह कहैत रहैत छनि। कहियो कात पप्पू केहुनीसँ मारैत बाजल करैछ—दुत, दिन भरि घर में घोसिआयल रहैत छें। किछु बाहरो देखल करहीं— दुनियाँ बड़ आगाँ बढ़ि चुकल छैक रे। आ, ई कहैत ओ बाम आँखि दबा देल करैत अछि। ओ बुझैत छथि पप्पूक आशय। मुदा हुनका बाहरी दुनियाँसँ घृणा भ' गेल छनि।

तहिआसँ आर, जहियासँ हुनक पापाक आर्थिक हालति रद्दी भ' गेलनि अछि। आमदनीक पदपर रहैत मित्र सभक हेँजसँ पीड़ित रहनिहार हुनक घर आब सुन्न रहैत अछि। अपने लोक हुनक बापक पोस्टपर बदली भ' क' अयलैक अछि। मुदा ओ आब अपन नहि, बड़ दूर भ' गेल छैक।

पहिनेक वातावरण आब घरमे बनबो करतैक कि नहि, गीता नहि सोचि पबैत छथि। एहन कठिनाह क्षणमे हुनका सभ वस्तुक प्रयोजन होइत छनि—मुदा बाबूजीक दुखसँ भीजल अनुहार सभ इच्छाकेँ मोनमे राखि लेबापर बाध्यक' दैत छनि। बापक हालति हुनकासँ देखल नहि जाइत छनि। बड़की बहीनक फरमाइस



आ दिन भरि घरमे कच-कच करब हुनका अखरैत रहैत छनि, मुदा ओ की करथु! ओ तँ घरमे प्रत्येक घटनाक क्रममे मात्र बापक अनुहार निहारैत रहैत छथि, जाहिमे हुनका डर लागबला शांति व्याप्त रहैत देखाइ पड़ैत छनि।

बाप हुनक टूटि चुकल छथिन, एहन हुनका बुझाइत छनि। किएक तँ ओ भगवानक पक्का भक्त भ' गेल छथिन। एकटा सम्बन्धक लोक जहिया-कहियो एत' आबैत छथि तँ ओ कहल करैत छथि—'साधारणतः भगवानक भजनमे लीन टुटल लोक होइत अछि।' आइ जखन ओ मंगल भवन अमंगलहारी ''''' आ जय हनुमान ज्ञान गुण सागर कहैत अपन बापकेँ देखैत छथि तँ हुनक आत्मा भोकासी पाड़' लगैत छनि।

की इएह छथि ओ बाबू, जे दिन भरि साहस आ धैर्यक बात करैत रहैत छलाह? जे केहनो आफत अयलापर हिम्मति नहि हारलनि, आब ओ घंटो रामायणक पंक्ति गुनगुनबैत रहैत छथि। आ, पापाक इएह मजबूरी त' हुनका गलाक दरद उघबाले' बाध्यक' देने छनि।

दरद मोन पड़िते साँचे हुनका दाढ़ीक नीचाँ दरदक टीस अभरि जाइत छनि। गिल्टी छनि बच्चेसँ। कैकटा डाक्टर देखलकनि। एक्स-रे कराओल गेलनि, दवाइ खयलनि, मुदा कोनो लाभ नहि। आपरेशन कराब' पड़तनि। मुदा''' '''! बाबूजी अपन हालतसँ मजबूर छथि।

कखनो काल तँ हुनका अपन जीवनसँ बड़ क्षोभ होइत छनि। सभ सपना जेना टुटैत सन लगैत छनि। किछुओ नहिक' सकती! गला नीचाँ दिस लटकैत बुझाइत छनि—ओ दर्दसँ चिचिया उठैत छथि। मुदा बापक हालति दर्द पीबा पर बाध्य करैत रहलनि अछि। भगवानक दिस ओहो जेना आब अनेरे ताक' लगलीह अछि।

ओना, हुनका भगवानपर विश्वास बच्चेसँ छनि, जखन ओ मायकेँ भगवान पूजैत देखैत छलीह। माँटिक भगवान माँक देखाउँससँ बनाक' पूजैत छलीह। आ आब तँ ओ साँचे पुजैत छथि। तेँ भगवानक आस छनि, जे ओ कोनो तरहेँ पार जरूरे निकालताह।

आ, फेर हुनका हँसी लगैत छनि अपनेपर। भगवानो की करथिन एनामे। पूरा परिवेश तँ घेरायल छैक एहने सन झंझटिसँ। अनेको परेशानी छनि। ककरा-ककरा देखथिन भगवान। सभ तँ अपने सम्हार' पड़तनि।

हुनका बुझाइत छनि, चारूकात कतेको टीस छै जे हुनका बेदम कयने जाइत छनि। गिल्टीक अपरेशन जकाँ ओकरो निकालिक' फेक' पड़तनि हुनका, आ ई करबाले' हुनका पढ़' पड़तनि। कमसँ कम मैट्रिक। तखन देखल जयतैक।

बापक भार ओ नहि बन' चाहैत छथि। बाबूक जीवनमे आबि गेल टीसकेँ आर ओ नहि बढ़ौती। अपन बाट स्वयं बनौती। निकालि फेकती टीसकेँ। अपना भीतर जेना एकटा विश्वासक जन्म होइत बुझाइत छनि। कमैत जाइत दरदकेँ बुझैत ओ सीरक तानि पलंगपर सुत' चलि जाइत छथि।



# मौसी

आइ मौसी जा रहलीह अछि। मौसी, माने केसरी बाबूक छोटकी सारि। रीता माइक छोट आ दुलारी बहिन। अठारह-उन्नैसक बयस मुदा नेनपन ओहिना वर्तमान। एकटा बेस सोझमतिया व्यक्तित्व। घरसँ बहिनक संगे भतिजीक ऑपरेशन मे एत' आयल छलीह। से भतिजी तँ चल गेलीह, हिनका बहिन घेरि लेलकनि। आ एहिना आइ दू मास भ' गेल छनि। एतेक दिनसँ ओ एहि घरमे रहि रहलीह अछि मुदा कोनो परिवर्त्तन नहि। वएह बकर-बकर मुँह तकैत अनुहार, देह-हाथ पटकि छिड़िअयबाक प्रक्रिया, ककरोसँ दू शब्द बजबाक अपन लालसा—सब ओहिना छलनि। एहि दू मासक परिवर्तित वातावरण हुनक मौलिक चरित्रकेँ कुसो-कलेप नहि लगा सकल। आ ओ ओहिना सत्रहम-अठारहम शताब्दीक बनल रहलीह।

मौसीक सभसँ प्रिय 'सखी' छलथिन रीता, केसरी बाबूक मँझिली बेटी। बारह-तेरह वर्षक उमेर, किछु लजकोटर, आ तेँ मौसीक रहस्यक भागीदार। कतहु बहराथि तँ दुनू गप्प करथि घंटाक घंटा। उठा-पटक, घमाचौकड़ी, हँसी-मजाक, गप्प-छड़ाका, सभ एक-दोसरकेँ जेना मिला देने होइक। खयबा-पीबासँ सुतबाधरि संग।

से रीताक डबडबायलो आँखि मौसीकेँ आइ रोकि नहि सकैत छैक। मौसा मौसीकेँ आखिर सभसँ छीनि ल' जा रहलैक अछि···। सब स्तब्ध।

मौसीकेँ ल' जयबाले' मौसाक कएकटा डेट फेल भ' गेल छलनि मुदा एहि बेर ठीक टैमपर आबि गेलाह। जहियासँ मौसाजी अयलाह तहियासँ मौसीक चंचलतामे बड़ परिवर्तन भ' गेलनि'। हम मार्क कयने रहिऐक। गम्भीर बनबाक बेसी प्रयत्न करथि। ई दोसर बात जे हुनक नेनपन जयबाक नाम नहि लेनि। बरु जोरसँ बाजब-भूकब बन्दक' लेलनि। सोरो पाड़थि एतेक जोरसँ जे जकरो सोर पाड़थि सेहो नहि सुनैक। मौसाजीक आगा निकलब जेना बड़ पैघ अपराध छलैक। महाप्रलयक समान। कतेकोबेर नेना सभ हुनका मौसाजीक अगाड़ी ल' जयबाक

असफल प्रयास करैक। कहियोकाल थपड़ी बजा किछु कहि दैक। तखन मौसी कठौत भ' जायल करथि। तथाकथित मर्यादाक बन्न छहरदेवालीक बीच छटपटाइत अजोह नारीक हास्यास्पद प्रतीक भ' जाथि मौसी....।

मौसीकेँ कतहु बाहर जयबाक होनि आ दरबज्जापर मौसाजी बैसल होथि तँ लीअ' ने ! आफन तोड़' लागथि। सौंसे घर खुरछाही कटने घुरथि। बाहर निकलब महासमस्या। केओ जोर-जर्बदस्ती बाहर ल' जानि त' दोसर बात।

मौसाजीसँ हुनका बड़ लाज होनि। आ एक दिन ई लाज तँ आर अपन सीमासँ बढ़ि गेल, जखन जयबासँ दू-चारि दिन पहिने फोटो खिचयबाक गप्प अयलैक। फोटो खिचायब तँ दूर, हुनक समस्या छलनि मौसाजीक संगे स्टूडियो धरि जयतीह कोना ? लोक हँसतनि। मोनमे लाज होनि। बेस घीचातानीक बाद दूटा रिक्सा आयल। तखन समस्या आयल, कोनपर के चढ़थि। मौसी अपन गमैया भाइकेँ अपना संगे चढ़यबापर तैयार, मुदा मौसाक संगे कनेक"। सब कहलकनि तँ बैसलीह संगे, मुदा जेना एक बाकुटक भ' गेल होथि। सर्द भ' गेल रहनि काया जेना। आ तकरा बाद ओ कतेक दिन धरि एहि एक रिक्साचढ़ीकेँ पश्चातापक रूपमे बजैत रहलीह। बेस क्षोभ भेल रहनि हुनका। फोटो खिचयबा कालक तँ कथा विचित्रे। मौसा-मौसी एकठाम फोटो खिचाबथि से सभक इच्छा। मौसाजीक सेहो। मुदा मौसी एहिले' तैयार नहि। ओ ग्रुपमे फोटो खिचयबाले' तैयार छलीह। जाहिसँ एसकर ओ मौसाजीक लग नहि बैसि सकथि। बादमे कहि-सुनि ग्रुप आ जोड़िया फोटो खिचाओल गेल। सेहो कतेक निगेटिभ जिआन भेलाक बाद फोटो सुतरलैक।

पहिल राति सुतबाक झंझटि भ' गेलनि। मौसाजी बिचला कोठरीमे सुतताह से निश्चित आ ओहिमे ओ सुतबो कयलनि, मुदा मौसी लेल ई पहाड़क बात जे ओ मौसाजीक संगे कोना सुततीह ! बेस काल धरि दछिनबरिया कोठरीमे मालाक संग घींचातानी भेल रहनि मौसीकेँ। अन्तमे माला कहाँदन जबर्दस्ती मौसीकेँ कोठरीमे धकेलि देने छलीह। से तखन जाक' सुतलीह। से की सुतलीह, मुरदे भ' गेलीह प्रायः। एहन परिवारमे जाहिठाम बजबा-भुकबाक पर्याप्त स्वतंत्रता छैक, पति-पत्नी जाहिठाम कॉमन वस्तु छिऐक, बेटा-बेटीक बीच खुजल प्रेमपूर्ण सम्बन्ध रहैछ, ताहिठाम एतेक दिनसँ रहियोक, मौसी अपनाकेँ बदलि नहि सकलीह अछि।



अपनो घरवला लग सुतबामे एतेक लाज ! ओतबे नहि सुतबोकाल सत्ते मुर्दा भ' गेल छलीह मौसी। केओ गोटे हुनका दुनूक बीचक सम्भाषण नहि सुनने होयत। हम प्रायः बरामदामे सभसँ नजदीक सुतल छलहुँ से एक्कोटा बात श्रवण नहिक' सकलहुँ। तेँ विस्वस्त छी जे केओ गोटे मौसीक बात नहि सुनने होयत। बजबे नहि कयने होइतीह, तँ की सुनतैक केओ !

उठबामे मौसी कमालक' देलथिन। कखन उठि गेलीह, किनकहु खबरि नहि। घरमे सभसँ पहिने उठबाक दाबा रखनिहारि रीताक माय मौसीक उठौलापर उठल छलीह। घर भरिमे सभकेँ अन्हरोखे मौसी उठा देने छलीह। एतेक तक जे सात बजे भोरतक सुतनिहार हम, से मौसी हमरो जगा देलनि। की कारितिऐक, उठही पड़ल।

मौसाजी एत्त' छओ दिन पूरा रहलाह आ ओतबे राति। मुदा ककर मजाल भेलैक आँगनमे जे हुनका संगे मौसीक एकटा बातो सुनि सकल हो ! सभक इच्छा जेना हीयेमे रहि गेलैक। मुदा हमरा एकर सौभाग्य भेटल छल।

दछिनबारी घरमे हम कपड़ा पहिरैत रही। ता मौसीक आवाज सुनलिऐक तँ चौंकि उठलहुँ। मौसी कतहु मौसाजीसँ बाजथु ! मुदा ई छलैक सत्य आ हमरे आगामे घटि रहल छलैक। हम अपन नजरि दोसर दिस घुमा देलिऐक। मौसाजी अपन बेटी शशी द्वाराक देल गेल गन्दाकेँ मौसीसँ साफक' देबाले' कहैत छलाह। हम सुनलिऐक जे बड़ मेंही बोलीमे मौसी हुनकासँ बजैत छलीह। हमरा संगे एकटा आर केओ आश्चर्यित छल— केसरी बाबूक आठ वर्षक बेटा पप्पू। मने ओकरो लेल अजूबे छल ओ दृश्य। मौसी ओकरापर ध्यान नहि देलथिन। मौसाक तँ बाते नहि। ओ शहरमे रहैत छथि। हुनका एहि घोघ-लाजसँ अश्रद्धा छनि। मुदा करताह की... सहि रहल छथि। ओहि साँझ आँगनमे रीता, माँ, माला, केशरीबाबू, मौसी, हम आ बच्चा, सभ बैसल रहिऐक। पहिलुका खिचायल फोटो बिगरि गेलाक कारणे दोसर फोटो खिचायब अनिवार्य भ' गेल रहैक। आ ताहि सम्बन्धमे गपसप भ' रहल छलैक। मौसी फेर फसादमे पड़ल छलीह। माला जयबाले' तैयार नहि। रीताकेँ सेहो रोकल जा रहल छलैक। तखन ओ मौसाजीक संगे कोना जयतीह। पुनः बाजल छलीह जे हमरा बड़ लाज होइत अछि। पप्पूकेँ प्रायः सुनल नहि

गेलैक । पटसँ बाजि उठल—"एह, आइ मौसी मौसाजीसँ फुसुर-फुसुर बजैत छलीह तखन लाजे ने होइत छलनि !" हमरा बुझायल जेना मौसी धरतीमे समा जयतीह । रीता मायक क्रोधित अनुहार पप्पूकेँ सिहरा देलकैक—ओ बेचारा अबोध की जानय गेलैक ई घर-दुआरक बात । केसरी बाबू भौंचक्क छलाह । ओतेक नीक जकाँ बातकेँ बूझि नहि सकलाह । मौसीक तँ कथे अजब । सौंसे मुँह उज्जर भ' गेल रहनि । रंगले हाथ पकड़ल गेल होथि, ताही सदृश ओ स्तब्ध भ' गेल छलीह । हम सभ स्थितिकेँ देखि बात बदलि देलिऐक तँ गम्भीरता समाप्त भेल रहय ।

मौसी जाधरि आंगनमे रहलीह, घर-दुआर गुंजयने रहैत छलीह । कमसँ कम एहिठाम जतेक दिन धरि हम हुनका संगे रहलहुँ, तँ इएह अनुभव कएलहुँ । हुनक चंचलता, आ बचकानी हाव-भावक बीच हुनक वास्तविक व्यक्तित्व जखन कहियोक' नुका जाइक तखन मौसीकेँ बूझब बड़ दुर्लभ भ' जाइक ।

हम आइ धरि मौसीक अनुहारकेँ नीक जकाँ कहियो ने देखलिऐक । मोनमे एकटा अगाध श्रद्धा आ अपनत्वक भाव हुनक सौन्दर्यकेँ देख' नहि दैत रहय । मुदा एक दिन जखनि ओ फोटो खिचयबाले' तैयार छलीह तखन सभ केओ हुनक सौन्दर्यक प्रशंसा करैत छल । तखन हमहूँ कनेक नीक जकाँ हुनका देखलियनि आ बुझायल जे प्रकृति हिनका संग सांचे न्याय कयने छनि । सत्ते, ओ बेस सुन्नरि छलीह । बड़ दीब लगैत छलीह ओहिकाल । मौसी एतेक सुन्नरियो भ' सकैत छथि, ओहन पहिलबेर अनुभव कयने रहिऐक । आइ मौसी जयबापर अछि !

जयबासँ एक-दू-दिन पहिने मौसीक सब चंचलता, नेनपन, जेना हेरा गेल रहैक । मौसीक सौन्दर्य मलीन भ' गेल रहैक । ककरो सूरतिकेँ आँखिमे भरि लेबाक उत्सुकता मौसीक विशेषता भ' गेल रहैक । हम नीक जकाँ मार्क कयने रहिऐक आ सोचने रहिऐक जे की सत्ते विछोह एतेक कष्टदायक होइत छैक ? एतेक दुष्ट होइत छैक ? फूलसन कोमल कायाबाली मौसी जेना दुइए दिनमे सुखा गेल छलीह ! नोरसँ कखनो भीजि जाइत लाल मुखमण्डल जेना आर करिआ भेल जा रहल छलैक, ई सभ केओ अनुभव करैक ।

हम सीरकक तरसँ मौसीक जयबाक तैयारीक स्वर सुनि रहल छी । हमर ई स्वाभाविक दुर्बलता रहल अछि जे ककरो विदाक दृश्य हम देखि नहि सकै छी ।



ओकरा सभक कानब हमरा हिलाक' राखि दैत अछि । आ तेँ आइ हम जानिक' किछु अबेरक' सुतबाक निश्चय कयने छी । मोन जाँतिक' पड़ल छी । मुदा ओह ! मोन मानैत नहि अछि । निवृत भ' अबैत छी, तँ मौसी नोरसँ अपन अनुहार डुबौने मौसाक संग रिक्सापर बैसि चुकल छलीह । एसकरियो रिक्सामे मौसाजीक संग बैसबामे लाज कयनिहारि मौसी पूरा मोहल्लाबलाक अगाड़ी बेहाल भेल रिक्सा पर बैसल अछि—ने कोनो लाज, ने कोनो अन्ध-मर्यादाक खियाल । सब जेना स्वाभाविक भ' गेल रहैक । रिक्सा बढ़ि जाइत अछि । जाइत-जाइत मौसीक नजरि हमरापर पड़ि जाइत छनि । अभिवादनमे हाथ उठैत छनि—हमरा ठकमुरगी लागि जाइत अछि । की जबाब दिऔक ! हम मात्र माथ डोला रहि जाइत छी । एहि घरक चंचलता, मौसीक मुक्त हँसी, घरक फुलायल वातावरण सभ पक्की सड़कपर दौड़ैत मौसीक रिक्साक चक्की संगे भागल जा रहल छैक । आ हम सभ आंखिमे डबडबा आयल नोरकेँ पीबाक असफल प्रयास करैत देखि रहल छी । रिक्सा नजरिसँ कात भ' जाइत अछि आ हमर आत्मा चीत्कारक' उठैछ—'प्रणाम मौसी ! फेर कहिया भेंट होयत, कहिया ने !"



# आँचर

बाहर बड़ जोड़ वर्षा भ' रहल छैक। रातिएसँ सौंसे शहरकेँ गनगनयने छैक। कतेक दिनसँ लोक पानिकेँ चातक जकाँ तकैत छलैक। आ से पानि अयबो कयलै तँ बाप रे·· बाप! सौंसे खेत-पथार टेहुन धरि पानिसँ भरि गेलैक अछि। आ····आब लोक उबेर चाहैत अछि।

ई पानि मोनकेँ भारीक' देने अछि। बरसातक समय लोककेँ कोढ़िया बना दैछ ने! हमहूँ रातिसँ एखन धरि सुतले छी। दिनक एगारह बाजि रहल अछि मुदा उठबाक मोन नहि करैत अछि। उठियोक' की करू? ओना आब निन्नो ने होइत अछि। कतेक सुतले जाए। कतबा बेर करोटपर करोट फेरि सुतलहुँ अछि मुदा निन्न नहि आबि रहल अछि। मोन जेना एहि बर्षाक बुन्नक टपटपीक संगे उधियाय लगैत अछि। भसिया जाइत छी·······। बहुत रास आगत-विगतक बात मोन पड़' लगैत अछि···। किए ने हो·····बैसल जे छी। बेस मोन पड़ैत अछि एकटा प्रवासक संस्मरण···। हम उड़' लगैत छी··· ओत'···ओत्तहि!

·······एकरा पत्रक बजाय तार बुझबै—बड़ाबाबूक पत्र आयल छल। बड़ाबाबू··· मने हमर आत्मीय। चालिसक लगभग उमेर। माथपर मुट्ठी भरि सीटल करिया केस····। हाफसर्ट, ढील पेंट, बस! साधारणे रहैत छथि। एक दशक सँ उपर भ' गेल छनि ओत' नोकरी कयला! गोट दशेक प्राणी छनि ओतुक्का प्रवासी परिवारमे ··सबकेँ एकटा नीक स्टैण्डर्डसँ राखि रहल छथि। बेस बुझक्कर, सौम्य, गम्भीर, नव प्रगतिक पक्षधर, आधुनिक विचारक पोषक आ सबसँ बेसी एकटा स्वच्छ इन्सान। हिनकासँ एकाएक आइसँ अढ़ाइ बरिस पहिने एतहि भेंट भेल छल। मात्र एक घंटाक भेंट··· आ फेर हम सभ अप्पन बनि गेल रही। चिट्ठी-पत्रीक सिलसिला चलैत अछि आ तेँ सम्बन्ध ओहिना प्रगाढ़सँ प्रगाढ़तर होइत जा रहल अछि। आ एहि सिलसिलामे एकटा पत्र पठौलनि अयबाले'। बेस उत्सुकतापूर्ण पत्र·······।



कतेको खेप ओइ पत्रकेँ घोंकि गेलहुँ! अन्तमे ई निष्कर्ष निकाल' पड़ल जे हमरा ओत' जयबाक अछि। तँ एक दिन अपन मित्र झाजीक संग जूमि गेलहुँ हुनका लग...। बेस आत्मीयताक संग बड़ाबाबू अपना डेरापर ल' गेल छलाह। एक गोट नव दुनियासँ संपर्कक झिझक········कोनादन लगैत छल। बैसकमे पहुँचिते बहुत रास नेना सभक सम्मिलित स्वर गुंजि उठल—भाइजी प्रणाम···! हम स्तब्ध रहि गेलहुँ। आह! कतेक प्रेम····कतेक आत्मीय! केहन श्रद्धा! बौक भ' गेल रही। एकटा आत्मीताय भरल वातावरण हमरा जेना पहिनहि वशीभूतक' लेलक।

निन्न नहि भ' रहल अछि। हम करोटपर करोट फेरि रहल छी! हम नहि सोचब ओतुक्का बात। जे सम्भव नहि, तकरा सोचब व्यर्थ। कहाँ पाबी हम ओ परिवेश, ओ मनुक्ख ··ओ अप्पन ··उहुँ! हम बरू कहुनाक' सूतब।

मुदा आह! बात हमरा दिमागमे चक्कर काटि रहल अछि। बाहर बिजलीक चमकबक संग ठनकैत ठनकाक भयंकर चीत्कारसँ बेसी जोरसँ घनघना उठैत अछि नरेश, देवेन्द्र, राकेश, सुनीता, मुकेशक सम्मिलित आबाज··· ··· भाइजी प्रणाम! आ हम एखनो बौक भ' जाइत छी।

हमरा बकौर लागि जाइत अछि। हम ओकरा सभक प्रणामक उत्तर नहि द' सकबैक। हम योग्य नहि। हम किछु नहि ··। एकटा गन्हाइत नालीक निरीह कीड़ा··· ··जकर समयसँ पूर्व विचार कुंठित भ' जाइछ—जे बहुत किछु चाहियोक' किछुक' नहि पबैछ ···। तेँ बाउ सभ जुनि अभिवादन करू। हम एहि योग्य नहि। हमर अन्तरमे भरल अछि आगि आ पानि। कहूँ आँखिसँ खुशीक बदला नोरक टघार आ मुँहसँ नीक वचनक बदला किछु अनसोहाँत ने बहरा जाय। डर होइत अछि। हम असम्पृक्त छी ने ··। दूर, सभसँ दूर, रह'बला प्राणी। तेँ आचार-विचार नहि जनैत छी। से····

सिल्केनक चादरि तानि लैत छी। नीक जकाँ मुँह-हाथ झांपि सुतबाक उपक्रम करैत छी। ने जागल रहब, आने ई फजूल सोचब। बीते ताहि बिसारि दै बला बातकेँ सोचि हम निन्ने पड़ब नीक बुझैत छी। मुदा········ गीताक भाय प्रथमे बैसकीमे बहुत किछु कहैत छथि। पंडितजी हमराले' पान लाब' चल गेल छथि। ओ कहांदन अपन गीताक बारे मे हमरा····ओह छोड़ू। की बाज' लागल छी। जे संभव नहि, ताहिले' सोचबे व्यर्थ। हम···अभिशप्त। पुनः गीताक भायक बड़ नम्र

स्वर कानसँ टकराइत अछि—'हे गीताक लड़का अहीं खोजि दियौक !' सत्ते हम जेना दबि गेल रही । एकटा अज्ञात भार····दायित्व हमर कमजोर कान्हके तरमड़ा देलक । हम स्वीकृतिमे मात्र माथ हिला दैत छियनि । ओ सरस्वतीजीक फोटोक एलबम देखबैत छथि····हम बड़ गौरवें देखैत छी·· विभिन्न दृष्टिकोणसँ···· आ पबै छी, एकटा नव गप्प, नव अस्तित्व ।

सरस्वती, मने बड़ाबाबूक जेठकी बेटी । किछुए दिन पूर्व सासुर गेलीह अछि । बड्ड सुभग ··सुसस्कृत····चंचला ·· वाचाल आ आर सभ गुणसँ भरलि । अनजानमे वियाह अनफिट परिवेशमे भ' गेलनि । हुर आ कोदारिक परिवेशमे रहनिहार व्यक्ति हिनक कोमलताकेँ की बुझतैक ? केओ दुनूक वियाहसँ आब प्रसन्न नहि अछि । मुदा आब भइये की सकैछ ! कहाँदन पत्रो आयल छलैक बड़ दुखपूर्ण···बन्न कोठरीक औनाइत धूआँ सदृश रहैछ ओ···।

भगवानक केहन विडंबना छनि, जकर पति नीक से अपने कुरूप आ जे अपने सुन्दरि तकर घरबला बेढब । प्रकृतिक ई विचित्र मिलान सरिपोँ हास्यास्पद अछि ।

बड़ाबाबू आ सीतूक माय कयबेर बाजि चुकल छथि जे कहाँदन गीता बजैत छथि जे ओ बियाह नहि करतीह । बरू, बाबू हुनका पढ़ाबथि, जतेक होइत छनि ततेक । ओ सीतूक स्थिति देखि बियाहसँ त्रस्त भ' गेलीह अछि । डेरायब कोनो अनर्गल नहि, उचिते छनि । जे संस्कार, जे परिवेश सीतूक जीवनकेँ रूढ़िक वेदीपर उत्सर्गक' देलकैक अछि···· ····ताहिसँ बुझनुक लोक डेराओ नहि तँ की करओ । गीतो तँ आखिर ओहि संस्कारक देन थिक । सीतू···! सत्ते अहाँ दयाक पात्र थिकहुँ, एक गोट तथाकथित निम्नवर्गीय परिवारक एकटा आदर्श दयनीय पात्र··· आ हम···हम ।

····ओह ! क्षमा करब सीतू । अहाँक बारेमे हम सोच'बला के ? कहाँदन शादी-बिआह भाग्यक बात होइत छै । विधना हाथ पकड़ि करा दैछ । से हमरा सोचबाक मतलब ? हम गलती कयलहुँ सीतू ! अहाँ कतौ रही, खुशी रही । आर हम कहिये की सकब ··दइए की सकब ? बड़ छोट पहिचान अछि ने ! नहि तँ किछु जरूर दितहुँ··· किछु ठोस···। मुदा··· आह ! हम फेर बहकि गेलहुँ । ई वर्षा



हमरा मारि देत । ई कछमछी हमरसभ चिंतन-क्रमकेँ गड़बड़ा देने अछि । अनर्थ सोचि लैत छी । की दितहुँ हम अहाँ के··? हमरा संगमे अछिये की ? दुनियाँक भिखारी हम···अहाँकेँ नहि सीतू··· हम नहि किछु छी···हमरासँ किछु नइ भ' सकैत अछि । हम पूर्ण दयाक पात्र अपने छी··· दू मुट्ठी प्रेम आ स्नेहक भूखल दरिद्र ।

इस्सऽऽऽ ! उड़ीस लोहछा देलक । कए दिनसँ डाल्फ छिटबाक ओरिऔन करैत छी । छीटि नहि पाबि रहल छी । बेस सुस्त भ' गेल छी आइ-काल्हि । ओत'सँ अयलाक बाद तँ आर···।

····गीताक माय अपन पेटी खोलि अपन आ सीतूक बूनल स्वेटरक अम्बार देखबैत छथि । हम मंत्रमुग्ध भ' देखि रहल छी । हमरा बुझाइछ, स्वेटर आ कार्डिगनक प्रत्येक फान हमर नियतिक क्रूरतापर हँसि रहल होअय । हम छटपटा उठै छी । हमरा ओ कोठली काट' छुटैत अछि । हम पड़ाय चाहैत छी । ताबत गीताक माय लारि दैत छथि घर-दुआरक बात । हमरा नहि नीक लगैत अछि । हमरा घर-दुआरमे राखले की अछि जे हुनका कहिऔन । एकटा ध्वस्त··· अपूर्ण खंडहर । पानि ल' केँ गीता अबैत छथि । चोर नजरिए हम देखैत छियनि । हमरा सँ लजाइत छथि । आ तँ हमरो साक्षात् देखबाक साहस नहि होइत अछि । बारह बर्खक उमेर···सतमामे पढ़ैत छथि । गीताक माय बजैत छलीह जँ आइ सीतू रहितैक तँ सौंसे मोहल्लाक सखी सभकेँ बजा अनने रहितैक जे "चलते चलो, मेरे भाईजी आये हैं !" सभक संगे बैसितय । गप्प-सप्प करितय । मुदा गीतामे से नहि····। कनेक लजकोटर छथि । नाच' जनैत छथि, गाब' अबैत छनि कसरतो नीकक' लैत छथि··· मुदा लजकोटर···लाज···उँह···! एह, आब हमरा उठहि पड़त । नीचा उड़ीस, उपर मच्छर । तबाहक' देने अछि । वर्षा एखनो धुरझार भ' रहल छैक । छुटबाक नाम नहि । हम देह-हाथ झाड़ि पुनः शान्त भ' जाइत छी ।···ध्यान फेर बटि जाइत अछि ।

·····"चलिये, भैया आइ० वी० तरफ !"—देवेन्द्र बड़ जिद्द कयने रहय । हम संग पूरि देलिऐक । बाटमे हम बच्चा सभक सामान्य-ज्ञानपर बेस ध्यान देने रहिऐक । केहन दीब संस्कार छैक ओकरा सभक । ओहो त' हमरे परंपराक

एकटा कड़ी अछि। मुदा फरक आकाश-पतालक। ओकर संस्कार, ओकर शिक्षा ओकरा हमरा सभक बच्चाक शिक्षा संस्कारसँ बेस उपर उठा देने छैक। ओ आदर्श भ' गेल अछि। अनुकरणीय। हमरा आब बुझाइत छल, ई आइ० बी० दस कोस दूर भ' जइतैक, जाहिसँ एकरा सभक संग हम घुमैत रहितहुँ दूर-दूर धरि। हमरा एकरा सभक सम्पर्कसँ आनन्द होइत अछि—सन्तोष होइत अछि।

सुनीता आ मुन्नूकेँ टॉफी लेल बजार चलबाक जिद्द, नरेश, देवेन्द्र आ राकेशकेँ गेन सिया लेबाक अनुरोध, गीता भाइक किछु नाश्ताक' लेबा लेल कहैत अपनत्वपूर्ण आग्रह आ खिड़कीक दोग द' तकैत ककरो दू जोड़ नेत्रक लालसा—हमरा बताह बना दैत अछि। सब चित्रपट जकाँ मष्तिष्कपर स्पष्ट देखा रहल अछि। हमर मोन आउल-बाउल कर' लगैत अछि।

हम चादरिसँ मुँह उघारि बाहर देखैत छी। एह, बापरे! वर्षा होइते छैक। बुझाइ छै अड़ियानधानक देतैक। लोकके बीओ ने पाड़ल छैक। नीक जकाँ। भाग्ये-भरोसे जे किछु पाड़ि लेने अछि, तकरे काजो देतैक। बाँकी त' बीओक जोगाड़ भिड़ाब'मे लागल होयत। आब मेघोकेँ कोनो ठीक नहि। सत्ते, 'भरठ जुग' आबि गेलैक। हम घोकरिया जाइत छी। किछु काल आब सुतबाक चाही।

···अयबासँ एक दिन पूर्व सुनीता बाजल छलीह—"कल चल जइबहू हौ! न जा, परसू जइह"—हम की जबाब दितिऐक! कोना कहितिऐक जे बाउ! अहाँ सभक घर-आँगन हमरा अपनो घरसँ नीक लगैत अछि। एहि ठाम हमरा मोनकेँ शान्ति भेटल अछि। अपनत्व भेटैत अछि। अपन घरक शुष्क वातावरणसँ दगधल काया ककरो प्रेम, ककरो स्नेह पयबा ले' बेहाल रहैत अछि···। एहिठाम सभ प्रेम देब' जनैत अछि। मुदा ··· सुनीता, हम अहाँक बात नहि राखि सकब। हम परदेशी—आन छी ने! हमरा अहाँक ई प्रेम, ई श्रद्धा जीबाक आस दिअबैत अछि ··जीवन नहि। हमरा जीवन चाही। आ एहि ले' हमरा एखन बड़ छिछिआय पड़त। एक गोट निस्सन मंजिल पयबा धरि। ई त' प्रथम पड़ाव थिक हमर··अर्ध मंजिल, ई जे बड़ाबाबूकेँ हम कयबेर कहि चुकल छियनि तेँ



हमरा जाय पड़त कोनो हालतिमे। हम पछुआ गेल छी। ओना पछुआयब हमर नियति भ' गेल अछि। आ इएह हमर जीवनक सभसँ पैघ ट्रेजडी थिक।

दोसर दिन भेने अयबाकाल··! एखनो मोन अछि ओ दृश्य, ओहिना··· बड़ कारुणिक, हृदयग्राही। गीताक मायकेँ हम भरिआयल मोने कहने रहिअनि—'झूलामे अबस्स आयब!' ओ भरल आँखिए अयबाक अश्वासन देलनि। नजरि खिरबैत छी। सुनीता सुतल छलीह। भेंट नहि भेल, बड़ दुख भेल छल। देवेन्द्र, नरेश, राकेश, मुकेश सभ जेना हतप्रभ ठाढ़ अछि। सदैव चंचल, बकबक बजैत ई नेना सभकेँ जेना बकौर लागि गेल होइक, चुपचाप सभ हमरा देखि रहल अछि। आ हम अपन आँखिमे डबडबा आयल नोरक बुन्नकेँ करिक्का चश्मासँ झाँपि लैत छी। गीता पुबरिया कोठलीक खिड़कीसँ देखि रहलि छथि··· उदास-उदास।

ओह! आब चलबाक चाही। सड़कपर चढ़ैत-चढ़ैत एक गोट बिदाक नजरि हम चौदह नम्बर क्वाटरपर दैत छी। मुदा·· आह! हमरा जेना चकचोन्ही लागि जाइत अछि। हमरा बुझाइत अछि जे उपस्थित सभ लोकक अस्तित्वसँ फराक एकटा आर ककरो अस्तित्व हमरा बिदाक' रहल अछि। अपन नोरसँ भीजल आँचर हमरा आगा पसारने। बलिदानी कोनो आत्माक ओ भीजल आँचर···· हमरासँ किछु माँगि रहल अछि··· हमरा स्तब्धक' देने अछि। हमर माथ घुम' लगैत अछि····। की, हमक' सकबै' बलिदान?·· द' सकबै किछु ओइ रक्त-रंजित आँचरमे? उहुँऽऽऽ! हम असक्क छी। हम दरिद्र छी। हमरा बुते किछु नहि देल पार लगतै। सत्ते कहै छलाह झाजी, हम बजै छी सएह, किछुक' नहि पबै छी। हम असमर्थ··· आह। हँ-हँ···हँ···जेना वायुमण्डलमे एकटा शोषित, जर्जर नारीक भयानक अट्टहास गुँजि उठैत अछि। ओ हमरा पुरुषार्थपर मने हँसि रहल अछि···। हम ओह! सते, किछु नहि। ओकर ओ हँसी जेना हमरा नस-नसमे घोसिया गेल अछि। आब हमर माथक नस फाटि जायत··· हम निष्क्रिय भ' जायब ··हम आब बेसीकाल धरि एना नहि टिकि सकब। हम···आब····।

····बस ओना खुजि जयतै!—बड़ाबाबू टोकैत छथि। हम जेना आकाशसँ खसलहुँ। सते, भावनामे कत्त' उधिया गेलहुँ। बस चौकपर लागल हेतैक·· फेर

गाड़ियो पकड़बाक अछि । आब ओहि ठाम ठाढ़ रहब हमरा बुते असह्य भ' जाइत अछि । हम आगाँ बढ़ि जाइत छी ।

बड़ाबाबूक जोड़ल हाथक प्रत्युत्तर थरथराइत हाथें दैत छियनि । माथपर एकटा बड़ पैघ बोझ अछि । जाहिसँ हम अपन सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ दबायल बुझैत छी । एकटा बड़ पैघ दायित्व, जकर निर्णय की हमक' सकबै ? सुनीताक देल वचन, गीता माइक आस भरल आग्रह, शिव प्रसादजीक याचना··· एक जोड़ा आँखिक अभिलाषा····आ' ·· आ ककरो भीजल रक्ताभ आँचरक चुनौती ···· ???

एह, प्रायः बुनछेक भ' गेलै आब ! उँह, आब उठहि पड़त । नहि तँ हमर दिमाग फाटि जायत । नहयबो-खयबाक अछि ।

'रे छौड़ा पानि ला ? -नोकरबाकेँ हाक दैत हम धरफराक' उठि जाइत छी।



# पांक

ट्रींग-ट्रींग, ट्रींग-ट्रींग, ट्रींग-ट्रींग··· !

हम टेलिफोनक चोंगा दहिन हाथसँ पकड़ि मुँहसँ सटा लैत छी—'हैलो !'

'चन्दरजी छथि ?'— रिसीभरमे प्रश्न अभरैत अछि ।

'हँ, हम बाजि रहल छी । अहाँ कत'सँ बजै छी ?'—हम पुछैत छियनि ।

'जी, हम होटल एभरेस्टसँ बाजि रहल छी । रूम नं० ३०२मे एकटा यात्री टिकल छथि । ओ अपनेसँ बात कर' चाहै छथि'—रिसीभर बातकेँ फरिछबैत अछि ।

'होटल एभरेस्टमे यात्री !'- हम सोचैत छी आ किछु स्मरणक' सिहरि जाइत छी । ई यात्री कहीं ·· !'

'ठीक छै', हम 'होल्ड ऑन' कयने छी, बजा दिऔन ।'-- हम चोगा पकड़ने कहैत छियनि ।

ओ जयबेर अबैए, एही होटलमे टिकैत अछि । पछिलो बेर जखनि ओ काठमाण्डूसँ आयलि छलीह तँ एतहि टिकल छलीह । आ से रंगताल भेलैक जे ·· । हमर देह ठीके एखनो सिहरि जाइत अछि ·· ।

··· साँझ छओ बजे हमरा घरमे फोन आयल रहय—'होटल एभरेस्टमे आउ । हम प्रतिक्षामे छी ।' हम घरसँ धरफरायल पहुँचल रही ओत्त' । पहिचान कोनो तेहन नमहर नहि भेल रहय । ओकरा प्रति एकटा अज्ञात आकर्षण मता देने रहय । काठमाण्डूमे बसनिहारि अत्याधुनिका कोनो मौगीक सम्पर्क ·· । काउण्टरपर जाइते मैनेजर सिहजीक मुस्की मोनकेँ आर गद्-गद्क' देने रहय । मने ओहो बुझैत रहैक जे हम भाग्यशाली लोक रही ··· । आ सिहजी स्लीप द' नाम टीपि पठा देने रहथि । ऊपर ।

हम बैसल अनेरे की सँ की गुनधुन कयने जाइत रही । आ अपनाकेँ ओकरासँ बात करबाले' फिट बनबैत रही । हम गाम-देहातक लोक आ ओ

आधुनिक संस्कृतिमे पललि कन्या "। सुनने रहिऐ काठमाण्डूमे कहाँदन एकरा लेल लोक सब मरैत अछि। एकबेर जकरा दिस ताकि दैक ओ पछोड़ धयने बिना नहि रहय। छोट खुट भरल देह, लल्होन गाल (जे बेसीकाल रूज लगा बनबैत छलीह), गोल-गोल कारी आँखि। आ परिधान एक रहय तखन ने। दिनमे कयबेर बदलैत अछि। जाहिमे सभसँ प्रिय पेंट आ शर्ट। टाइटसँ। जाहिसँ छातीक उभार स्पष्ट देखि पड़ैक। नितम्ब आ छाती, दुइएटा त' ओकर विशेषता बुझाय हमरा ''।

पटर-पटर ध्वनि सूनि पड़ल रहय। निश्चय सौण्डिलक आवाज रहैक। हरियर रंगक साड़ीमे लेपटायलि रेखा देखि पड़ल रहय। हपसिक' लग आयल रहय 'हेलो चन्दर! कयबेर डेरामे टेलिफोन करबयलहुँ मुदा लापता रहैत छी। बुझाइए कतहु चक्कर चलबैत रहैत छी की?' ओ ठठाक' हँसि पड़ल रहय। हम की उत्तर दितिऐक, ओकरा! परबाहि नहि रहैक। ओ हमर बाँहि पकड़ने ऊपर लेने चलि गेल रहय। हम जाइत-जाइत सिंहजीक रहस्यमय मुस्किक पाछाँ बेहाल भेल जाइत रही। कहूँ इहो हमरा बारेमे ''।

रूममे हम प्रवेश कयने रही। डबल बेडक रूम। रेखा रहैक एसकरे आ बेड दू? किएक पुछितियैक। हम पुबारी कातक बेडपर बैसि गेल रही चुपचाप। किछु बाजू तँ की?

रेख बातकेँ बढ़ौने रहय—'हम अहाँ ला काठमाण्डूसँ सनेस लयने छी। लेब?' हम छक्क पड़ल जाइत रही। ई की लाओत हमरा ले'। सभदिन अनकर लेनिहारि हमरा लेल की लओलक अछि।

'की अछि?'– हम पुछने रहियनि।

ओ अपन खाटसँ दुनू पयर नीचाँ खसा तरमे निहुरल रहय। आ एकटा हाथ बढ़ा निचाँसँ गिलास आ बीयरक आधा खाली कयल बोतल बहार कयने रहय। ता ओकरा किछु मोन पड़ल रहै, हमरा दिस ताकि हँसल रहय—'एह, अहूँ बुद्धुए रहि गेलहुँ। अहाँ कोनो लड़कीक कोठलीमे छी! गेट बन्दक' देबाक चाही अहाँकेँ!'



ठीके, गेट तँ खुजले रहै। ओना हम एकरा बन्न करब जरूरियो नहि बुझने रहिऐ। भेंटक'क' चल जायब। ई बन्न-तन्न के करओ। अनेरे लोक किछु सोचि लेत ''। मुदा आब तँ बन्न करही पड़त। हम उठल रही। आ सिटकिनी लगा देने रहिऐक। फेर आबिक' पलंगपर बैसि गेल रही। आ उत्सुकतासँ रेखा दिस देख' लागल रही ''।

रेखा गिलासमे बीयर ढारि गिलास हमरा दिस बढ़बैत बाजलि– 'हे लीअ'! इएह सनेस अछि अहाँ लेल। काठमाण्डूसँ खासक' अहीँ लय अनने छी। संगे पीअब से बिचारि '''।'

'ई हमर सनेस?'—हम मनाक' देने रहिऐक—'नहि, हम नहि पीबैत छी।'

रेखा हमरा दिस आश्चर्यसँ ताक' लागल रहय—'दुत्, मजाक नहि। अहाँ नहि पीबैत होयब से हमरा बिसवास नइँ अछि। पिबू ने ''!'

'ठीके रेखा, हम नहि पिबैत छी। कहिओ ने आइधरि मुँह लगओलहुँ अछि। पीबू अहीं!'—हम दृढ़ताक संग मनाक' देने रहिऐक। आइधरि जकरा देखैत देरी हमर सम्पूर्ण व्यक्तित्व पंगु भ' जाइत अछि से जहर हमरा देखबैत अछि रेखा''''। कहांदन 'सनेस' छै ओकर ''। थु:। मोन घृणासँ भरि जाइत अछि। रेखापर नहि, उच्चताक आग्रहसँ जीबैत लोकपर—जकरा लेल इएह सभ किछु छै।

रेखा अकबका गेल रहय। ओकरा विश्वासे ने भेल रहै जे हम नहि पीबि सकैत छी। हम स्पष्ट देखने रहिऐक, ओकर मुँह बिधुआ गेल रहै। तखन बड़ दुख भेल रहय '''आइ जँ हम पीबैत रहितहुँ!

ओ गिलासकेँ दहिन हाथसँ पकड़ि गटागट बीयर पीबि गेल रहय। मुँह कनेक कालक लेल कड़ुआयल रहै। फेर प्रकृतस्थ भ' 'आधीरात' पढ़' लागलि रहय।

हम यंत्रवत् बैसल रही। रातिक नओसँ उपर भेल चल जाइत रहैक। ओकर मूड देखि ओहिठामसँ चल आयबे ठीक बुझाइत रहय। बरू भिनसरे बात क' लेब। से कहने रहिऐक—'रेखा, एखन आब हम जाइत छी! बरू भोरे आयब ''।'—'नहि, एखन बैसू। कनेक काल! भोजन कयलहुँ?'—ओ आदेशक संग प्रश्न कयने रहय।

हम तँ मारवाड़ी वासामे खाना खा लेने रही। नोकर नहि रहने सबेरे होटलमे भ' गेल रहै। से कहने रहिऐक—'हँ, हम तँ खयलहुँ !'

'तखन चिन्ता कथीक। एही ठाम सुति रहू। दूटा बेड त छैहे !'

हम सर्द भ' गेल रही। घाम छुटि गेल रहय ओहि राति हमरा। हम, आ एहि कोठरीमे सुतू ! जनकपुरक लोक काल्हिसँ सड़कपर चल' नहि देत।

'नहि, आब रातियो भ' गेलैक। हमरा आन ठाम निन्नो ने होइत अछि। तेँ जायबे उचित।' हम सफाइ देने रहिऐक।

'हँ-हँ, हम बुझैत छी। अहाँ बदनामीक डरसँ एत्त' सूत' नहि चाहैत छी। खैर, नहि सूतब। कनेक काल तँ थम्हू !' ओ दुखी होइत बाजलि रहय।

हम कनेक देर आर रुकि जायब उचित बुझने रही। पुनः यंत्रवत् बैसि गेल रही। दोसर खाटपर सुतलि रेखा बेहोश होयबाक स्थितिमे आबि गेल रहय। मने दारू लागि गेल रहै। ओकर अस्त-व्यस्त हालति हमरा तँ आर डेरा देने रहय। कहीं····!

नहि, आब हमरा रहब ठीक नहि। हम ओकरा लगमे जाक' जयबाक अनुमति लेब' चाहने रही। ओकरासँ गप करबाक आ बात करबाक सभ उत्कंठा रातिक करिछाओन सिआहमे डुबि गेल रहय। रहि गेल रहय मात्र भय—सामाजिक मर्यादाक। तेँ पड़ायब जरूरी···।

'रेखा ! है, दस बाजि गेलै। आब हमरा जायब उचित !'—आ ओ हमर बातकेँ अनसुनाक' हाथ पकड़ि बैसा लेने रहय। आब हमरा बाध्य भ' ओकरे बिछाओन पर बैस' पड़ल रहय। छातीक धड़कन एक्सप्रेस भ' गेल रहय। आ रहि-रहिक' नजरि दरबाजापर चल जाय। कहूँ केओ केवार नहि खटखटबै—'के छी ?' हम इहो जनैत रही, एना होटलमे होइत नै छै मुदा मोन मानय नहि···। घमा आयल देहकेँ पंखाक हवा नहि सुखा सकैत रहय। हमर जान अवग्रहमे पड़ि गेल रहय। की करु ? रेखा अस्त-व्यस्त रहय। हम देखने रहिऐक जे ओ जानि-बूझिक' अथवा दारूक प्रभावसँ कपड़ाक ख्रिआल छोड़ि देने रहय। मैक्सीक उपर द' क' छातीक



चमकब हम अनुभव तँ कयने रही, मुदा भसिअयबाक स्थितिकेँ धरि रोकने रही। मनुक्खसँ पाथर भ' गेल रही ।

दससँ बहुत उपर भ' गेल होयतैक। बाट आब जाम भ' गेलै होयत। आ डेरा सुदूर उत्तर जयबाक रहय। हम धरफराक' उठल रही। हमर मोन कहने रहय, आँखि मुनने रेखाकेँ ओहिना पड़ल छोड़ि दी आ उठिक' भागि जाइ। ने उठायब, आने···!

मुदा हम तखनो बड़ असमंजसमे पड़ल रही। जाहि रेखासँ गप करबाले', एकर सान्निध्य पयबाले' पाइ आ प्रतिष्ठा सभ किछु गमबयबला लोक तैयार बैसल रहैत अछि, आ जे देखिक', तड़पाक' आनन्दित होइत रहैत अछि, उएह रेखा एहन अवस्थामे हमरा लग ! एकदम हालक जान पहिचान···! तखन····? की ई हमरा जाँचि तँ ने रहलि अछि ? देखी, इहो तँ मरदे अछि, की करैए ?

नहि, आब हम किन्नहु नहि रहब। हम उठल रही। दरबाजापर जाइत की फूरायल रहय, घूरिक' फेर पलंग लग ठाढ़ भ' गेल रही। भयंकर बिड़रो उठल रहय। किदन-कहाँदन सोचने रही। उटपटांग सभ···।

'हम जाइत छी !'—हम रेखाकेँ सुगबुगाइतो ने देखने रही। लात लगाक' दरबाजा खोलि बाहर आबि गेल रही। भक द' जेना साँस पलटल रहय। बाहर ठंढा हवाक झोंक मोनकेँ परतारने रहय। आ हम सीढ़ी दिस डेग बढ़ा देने रहिऐक। सीढ़ीपर अबैत-अबैत हम रेखाक दरबाजा भीतरसँ बन्न होइत स्पष्ट सुनने रही। मने रेखा जागल छल—होसमे छल। तखन ई ढाढ़स··?

उतरैत काल काउण्टरक आगु-पाछु हम कय गोटेकेँ देखने रहिऐक। स्थानीय आफिसक हाकिम सभकेँ। ई सभ मरल गायपर उतरैबला गिद्धक हेंज बुझायल रहय। हमर डेग नमहर भ' गेल रहय। डेरापर अयलाक बादो हमर शंका कम नहि भेल रहय। नहि जानि रातिमे की सभ भेल होयतैक !

भोरे जखन टीसनपर गेल रही हम तँ सेकेण्ड क्लासक गेटपर ललका फ'ड़क कोट पहिरने रेखा हमरे तकैत बुझायल। देखिते चिकड़ि उठल रहय—'ओह चन्दर ! कत' छलहुँ ? जल्दी आउ !'

हम अनुमान कयने रही जे ई बेसी उताहुल अछि। किछु कह' चाहैत अछि। मुदा एत' भीड़ छै तेँ कहि नहि पाबि रहल अछि। एकरा एकान्त चाही। हम भावनाकेँ बुझैत कहने रहिऐक—फस्ट क्लासमे चल। ओतहि बैसा दैत छियौक।

'हँ, एकदम ठीक। ओतहि ठीक रहत।' रेखा अपन छोटका सूटकेश हाथमे लेने सेकेण्ड क्लाससँ उतरि गेल रहय। ओकर व्यग्रता अनेरे प्लेटफार्मपर लोकक नजरिमे चढ़ल जा रहल छलै। ओहुना ओ जतहि जाइत अछि, मधुमाछी जकाँ लोक कात-कात भनभनाय लगैत छैक।

डिब्बामे स्थिरसँ बैसल रहय। मोनकेँ थीरक' बाजल रहय रेखा—'राति अहाँके अयलाक बादतँ बड़ गजब भ' गेलै !'

'अँय, की भेलै ?'—हमर शंका ठीक बैसल रहय भरिसक।

'अहाँक गेलाक एक घंटाक बाद दरबाजा पीटल गेल रहय। तखन हम पुछने रहिऐ जे के अछि ? मालिक रहय होटलक। खोलब तँ जरूरीए। ओ आबि किछु एम्हर-ओम्हरक बात पुछि चल गेल रहय। हम बन्नक' देने रहिऐ केबाड़ आ पलंगपर सूति रहबाक प्रयास कर' लागलि रही !'

'तखन ?' उत्सुकता बढ़ले जाइत छल।

'फेर उएह मालिक अबैत अछि। मुदा एहिबेर ओकरा संगे टाइ पहिरने एकटा अपटूडेट छौंड़ा सेहो रहैत अछि। मालिकक व्यवहारसँ बुझायल, ओ कोनो हाकिम रहल होयत। आ तखन जे ओ हाकिम सन छौंड़ा बाजल से की कहू !'—रेखाक मुँह जहर भ' गेलै। कनेक काल गुम्म भ' अपने आगाँ बाजलि ओ—'ओ आदमी हमरा संगे राति बितब' चाहैत रहय !'

'अँय, राति बितब' !'—हम अचंभित भ' गेल रही। हम नीचा उतरैत काल ओहि 'हाकिम'केँ देखने रहिऐ आ खूब नीक जकाँ चिन्हैत रहिऐ। मुदा ओ एहन भ' सकैत अछि—नहि बुझने रहिऐ।'

'हँ ! आ से खूब जोड़ द' क'। हम कतबो मना केलिऐ, ओ मानिते ने रहय। कहय, चन्दर जहन आबि सकैत अछि त' हम किए नहि !'

'सार, पाजी !'—हमरा मुँहसँ अनायास गारि निकलि जाइत अछि।



'हम कहने रहियै चन्दरक संग हमर सम्बन्ध किछु दोसर अछि। अपन लोकक सम्बन्धसँ बीरानक सम्बन्धकेँ तुलना नहि कयल जा सकैत छैक। आ ई तँ हमर खुशी अछि ने जे ककरा संगे हम रही—ककरा संगे नहि। ताहिसँ तोरा की ? नीक चाहैत छी तँ चल जाउ!'—आ खूब डंटने रहिऐ तँ ओतसँ गेल रहय। रेखाक आँखि जेना पनिआ गेल रहैक। नारीक विवशताक एकटा रूप देखने रही हम। नीर तँ ओकर निरीह व्यक्तित्व किंवा सहज आ पवित्रताक प्रमाणपत्र होइछ ने ! कहने रहय ओ जे आब आयब तँ हम होटलमे नहि रहब अहींक ओहिठाम रहब। से···। आ फेर एकबेर ओकरा प्रतिक सहानुभूति भय आ रोमांचमे बदलि गेल रहय तहिया····। गाड़ी सीटी बजओने रहैक—हम हाथ हिलबैत डिब्बासँ उतरि गेल रही····।

आ आइ टेलिफोन आयल अछि फेर होटल एभरेस्टसँ। के अछि तकर ठेकान तँ नहि अछि, मुदा होटल एभरेस्ट आ रातिक आठ बजे·····! ककर फोन भ' सकैत अछि। फेर ओ त' कहने रहय, होटलमे नहि टिकब···! कहीं ओ नहि तँ अछि। अथवा हमरासँ झूठ बाजल रहय····!

आध घंटासँ उपर भ' गेल अछि रिसीभर उठौला। की करैत अछि एखन धरि। ता रिसीभरमे किछु घुरघुराइत अछि। हम कानसँ सटा लैत छी—"हेलौ; चन्दर जी छथि ? ओ बाथरूममे छथि। अहाँकेँ कहलनि अछि तुरत एतहि अयबा ले'।" नारी बोलीक सुमधुर स्वर सुनबाले' पाथल कानमे ई मोटका मैनेजरी बोली गरम तेल ढारि देल सन बुझि पड़ैत अछि। रिसीभर फोनपर पटकि दैत छी। फेर रहस्य बनले रहि गेल। गुन-धुन छुटल नहि।

हमर रिक्सा होटल एभरेस्टक आगां रुकैत अछि। रिक्सावलाक पाइ फारिछा हम भीतर प्रवेश करैत छी। काउण्टरक ड्यूटी प्राय: बदलि गेल छलैक। ड्यूटीपर सिंहजी छथि। ओ हमरा देखि अनेरे मुस्किया दैत छथि। हम आब पूर्ण आश्वस्त भ' जाइत छी—रेखे अछि। हम इशारा करैत छियनि। ओ मुस्किआइत बजैत छथि—"अरे अपने लेल ! जायल जाओ, उपरे छथि। रूम नं० ३०२।"

हम सरासर उपर चढ़' लगैत छी। पछिला बेरक घटना बेर-बेर मोनमे

अबैत अछि। आइयो राति आठेसँ शुरू छैक। एहूबेर एसकरे अछि। कतौ फेर जँ बबाल उठओलक तँ…।

रूम नं० ३०२। हम दरबाजा खटखटबैत छिऐक।

'के अछि ?'—भीतरसँ मधुमे बोरल शब्द बहराइत अछि।

हम नेहाल होइत उत्तर दैत छिऐक—'हम छी।'

'ओह, चन्दर ! आउ-आउ। हम कनेक फ्रेस होइत छी।'—रेखाक आज्ञाक संग हम भीतर प्रवेशक' चुकल छी। रेखा… ! कोठरीमे नहि ! ओह बाथरूममे फोहारा चलैत छैक। मोनसँ नहा रहलीह अछि। बाप रे, कतेक काल एकरा नहायमे लगैत छैक…। ताबत बैसहि पड़त।

रूममे एकटा छोटकी सूटकेश, हैन्ड ब्याग, बड़का पर्स, उचकी एँड़ीक चट्टी। खुट्टीमे शर्ट आ पेंट टाँगल। हम ओछाओनपर राखल 'सत्यकथा'क प्रेम व हत्या अंक उठा पढ़' लगैत छी।

बाथरूमक केबाड़ चड़मड़ाइत छैक आ ओहि द'क' द्वितीयाक चान हुलकी दैत छैक। शीघ्रहि एकटा खुशीक सिसकारीक संग कोठलीमे पूर्णिमाक प्रवेश होइछ। ट्यूबलाइट जेना तरेगन भ' गेल हो।

'कहू, ठीके छी ने !'—रेखा भीजल केसकेँ तौलियासँ रगड़ैत हमरासँ पुछैत अछि।—'हँ, ठीके छी। तोँ कखन अयलेँ ?'—हम ओकरे पुछैत छिऐक।

'अयलहुँ तँ दिनेमे। साढ़े तीन बजे प्लेनसँ। जयनगरबला गाड़ी छुटि गेल तँ अहाँकेँ फोन कयलहुँ, मुदा अहूँ नहि छलहुँ, तँ हारिक' आइ फेर हमरा एतहि रह' पड़ल।'—रेखाक सफाइ हमरा सन्तुष्टक' दैत अछि।

तखने बिजली गुम्म भ' जाइत छैक। अन्हार गुजगुज कोठली आ ओहिमे दूटा विपरीत लिंगी मनुक्ख…। किछु भ' सकैत छैक। मुदा से होइत छैक किछु नहि। रेखा हमरा धकिअबैत टेबुलक निचका तहपर राखल मोमबत्तीकेँ सलाइसँ लेसैत अछि। एकटा मद्धिम प्रकाश कोठलीमे छिड़िआ जाइत छैक।

गर्मीत' खूबे छैक एहिबेर। देह पसीनासँ ठीके नहा जाइत अछि। बिना खिड़कीक एहि घरमे तँ आर प्राण चल जायत। हमरा हँसी लगैत अछि अपने



मोने। आइ रेखा प्रायः एहि कोठलीमे जानिक' रहलीह अछि। बिना खिड़कीक कोठरी। ओइ बेर कहाँदन खिड़की द' क' केओ पैसैत रहैक तँ चिचिआयल रहय—'ईऽऽऽ …हे पड़यलै …!'

हम धसकबाक बहाना बनब' चाहैत छी—'राति अन्हरिया छैक। हमरा जाय पड़त फेर ओतहि। तोँ अयलेँ, हम भोरे भेंटक' लेब। आब…!'

'नहि, भोरे हम गाम जायब। ट्रेनसँ। अहाँसँ भेंट भ' सकत कि नहि। ठहरू, कनेक लाइन अबैत छैक तँ चल जायब। गर्मी तँ ठीके बड़ छैक।' रेखा केसमे ककबा फेरैत बाजलि।

हमरा फेर एकटा भय सतब' लागल। राति भ' गेने परेशानी तँ होयबे करतै, कहीं… !

बड़ीकाल धरि गुमसुम पड़ल रह' पड़ल। किछु फुराइत नहि अछि। रातुक एहि अवस्थामे आबि सभ आकर्षण हमर खत्म भ' जाइत अछि, रेखा लग।

'हमरा तँ एत्त' मजबूरीमे रह' पड़ल ने ! एसकरि ठहरबामे डर लगैत अछि आब। कोन ठेकान…!' केस झाड़ैत रेखा सहज रूपेँ बजैत अछि।

हम एहिसँ आगाँक इच्छा बुझबाक स्थितिमे आबि गेल छी। ओ कोनो बेर कहि सकैत अछि—'डर लगैत अछि। अहूँ सुति रहू ने एत्त' !' से हम पहिने समझा देब' चाहैत छी—'एह, होटलमे डर कथीक। हम ओकरा आबिक' खूब डंटने रहिऐ। ओ क्षमा-तमा मांगि लेने रहय…। तेँ आब कोनो तरहक डर नहि।'

रेखा चुप अछि। केस किछु रुक्ख भेलैक। ओ हाथसँ केसकेँ पाछांमे घुमाक' जूड़ा जकाँ बान्हि लेलक। हम घड़ी देखैत छी—दस भ' गेलैक, आब चलक चाही। हम उठैत बजैत छी—'लाइन नहि अओतैक। एहि भरोसे हम राति भरि एत्तहि बैसल रहि जायब…। तोरा तँ एत्तहि रहबाक छौ—हम तँ दूर जायब ने !'

रेखा फेर चुप भ' जाइत अछि। एकटक नीचाँ देख' लगैत अछि। जेना किछु गुनधुन कर' लागलि हो। हम ठाढ़ छी। ने हमरा बैस' कहैत अछि' ने जाय। जेना भीतर कोनो झंझावात चलि रहल हो। हमरा ओत' प्रत्येक क्षण खतरासँ खाली नहि बूझाइछ। कहीं…… !

'नहि, हम एत्त' एकसरि नहि रहब। लाइन नहि छैक। की तँ अहाँ एत्तहि सुतू, नहि तँ हम अहींक घरपर जायब"" !' रेखा छातीकेँ मजबूत करैत बाजलि। ओकर बातक दृढ़ताकेँ देखि हम तँ अवाक भ' गेलहुँ।

एत्त' तँ हम तूति नहि सकैत छी। आ घरपर कोना ल' जैबैक ! बड़ धर्म-संकटमे पड़ि गेलहुँ। जाहि लोकलज्जा आ बदनामीक डरे होटलमे नहि सूति रहल छी—वएह बदनामी तँ घरोपर गेने भ' सकैछ। हम साफ मनाक' दैत छिऐक— 'नहि, ने हम एत्त' सूतब आने तोँ हमरा ओत्त' जयबेँ। लोक की कहत !'

'ओह, तँ अहाँ अपन बदनामीक डरसँ हमरा एहिठाम एकसरि गिद्धक हेंजमे छोड़ि जाय चाहैत छी ? बेर-बेर हम कतेक प्रतिकार करबैक ! अहूँक इएह इच्छा अछि तँ... जाउ। हम नहि, रोकब'—सिसकैत रेखा बजैत अछि।

'हम बड़ अचंभामे पड़ल छी। जाहि खतराक डरें सानिध्यसँ बच' चाहैत छी—तकरे बेर-बेर सामना अजीब अनुभूति दैत अछि। रेखाकेँ खूबे नीक जकाँ बूझल छैक—हमरा घरमे सुत'बला एक्केटा रूम अछि। ओत' गेने एकरो ओहिमे सुत' पड़तैक। मुदा जिद्द कयने अछि। नहि ल' गेने आब दोसरे बदनामी होयत। रेखाक बाप ओकरासँ परिचय करबैतकाल हमरा कहने रहय—'ई हमर बेटी अछि ! काठमाण्डूमे रहैत अछि। जहिया कहियो ओत'सँ आब' वा जाय बेरमे जनकपुरमे रहैक तँ अपना जकाँ देखबैक। अहींक आसपर... !' हमरा दिस आशा-भावसँ देखने रहय रेखा। तकरा बाद कयबेर अयलैक जनकपुर। मौका-कुमौका आर्थिक सहयोग धरि हमक' दैत रहलिऐ। आ बेर-बेर ओ कृतज्ञतासँ भरल आँखि हमरा दिस तकैत रहल। जेना विश्वासे ने होइ हमरापर' जे हम ई सहयोग बिना कोनो प्रतिदानकेँ क' रहल छलिऐ। कहबो करैक ओ— अहाँक सब उपकारक बदला हमरा चुकयबाक अछि। जरूर चुकायब ..। हम बातकेँ हँसिक' टारि दैत रहलिऐ। हम जनैत रहिऐ—ई औपचारिकता लेल मात्र बजैत छल। जनकपुरमे ओ की हमरा उपकृत करत...। एत' हमरे जरूरति छैक ओकरा। आ आइ हमरा आगाँमे बैसलि रेखा पुनः सहायताक भीख माँगि रहलि अछि। हम की करू !

नहि, ओकरा ल' जाय पड़त अपने ओत'। रहल हमर बात, तँ देखल जयतैक....।



हम रेखाकेँ नजरि गड़बैत कहैत छिऐक—'अच्छा चल, डेरे पर चल।'

रेखा प्रशन्न होइत हमरा दिस देखैत अछि। जेना हमर बोलीपर विश्वासे ने भेल होइक। सब समानकेँ यथावत राखि दैछ। टेबुलपर राखल ताला उठा बाहर अबैत अछि। हम ताला केबाड़मे लगा दैत छिऐक। ओ साड़ीक पल्ला ठीक करैत अछि। हम दृढ़ताक संग सीढ़ी उतर' लगैत छी—पाछाँसँ रेखाक चट्टीक आवाज हमर संग दैत अछि !

□

# तोरा संगे जयबौ रे कुजबा

आकाशमे कारी मेघक टिक्कड़ि मटिआ तेल जकाँ पसरि रहल छैक। मेघ फेर औतैक, तकर संभावना पूरा छैक। कुमार एकबेर चारूभर आकाशमे नजरि फिरबैत छैक। ओ हाथमे राखल चाइनीज छाताकेँ निहारि आड़िपर बैसि जाइत अछि।

'एक तँ ऊ गाम नै अबै है। जनकपुरमे टंडैली करैत फिरै है। आ दोसर अयबो करै है तँ खेतो-पथार नै जाइ है। गिरहत छी, खेत-पथार गेली-देखली। जन-बनिहारपर कोन बिसबास !'— गुड्डू माइक उपराग सुनैत रहैत अछि। आइ ओकरे मोन शांत करबा लेल ओ खेत आयल अछि।

खेत अबिते ओ चारू कित्ता घूमि गेल अछि। पानिक कोनो ठेकान नै। आड़ि बन्हने कतेक दिन चलतै। गजारिक' खेत तैयारक' देने छैक ज'न सभ। आब लगातार रोपनी चाही। गोट पचासेक ज'न आइ ओकरा रोपनीमे छैक। बड़का कित्तामे ह'र बहै छै। गाछी लग बीया उखारल जा रहल छैक। आ एत' पोखरि कातमे ज'न सभ रोपि रहल अछि। ओ एतहि अँटकि गेल अछि। गिरहत देखने कनेक जल्दी ……।

हमरा संगे जयबे गे मेघनियाँ
बड़ दुख होयतौ—
रौदे-बसाते देहबा होतौ झामर……

आड़िपर बैसल कुमार चौंकि उठैत अछि। ई गीत जेना ओकर मर्मकेँ छूबि दैत छैक। ओकरा बुझाइत छैक -ज'न सभ जेना ओकरे देखिक' ई गीत गायब' शुरूक' देने होइक।

अपन प्रियतमाकेँ अपना संगमे नहि ल' जा सकबाक भयंकर मजबूरी ढोइत एहि लोकनायकक आर्त्तनाद आजुक समस्त प्रेमी-हृदयक दर्दकेँ अभिव्यक्त करैत अछि।



कुमार छटपटा जाइत अछि। एहि लोक-नायिकाक अनुनय ओकर सम्पूर्ण बिसरल घाओकेँ हरिया दैत छक—'हमरा संग रहिक' अहाँकेँ दुख होयत। हम ……।' बहुत दिन पूर्व कुमार लक्ष्मीकेँ कहने रहैक। लक्ष्मीक प्रति कुमारक निश्छल सिनेहकेँ ओ प्रेम बूझि लेने छलीह— आ अपन जरूरति ओ कुमारमे देख' लागल छलीह। ओकर ओही जिज्ञासाकेँ देखि कुमार ओकरा समझबैत बात घुरा देने रहैक — 'नहि लक्ष्मी ! हमरा संगे रहिक' अहाँकेँ दुःख होयत। हम तँ बसल परिवारक लोक छी ने ! नाना जंजालसँ घेरायल‥ । अहाँक चित्त शांत नहि रहत हमरा लग…।'

मुदा लक्ष्मी बात नहि मानने रहैक। ओकर बचकानी बुद्धिपर ओकरा तरस आयल रहै—छओ-पाँच किछु बुझनिहारि नै अछि लक्ष्मी। आ ओकर जिद्दकेँ देखि ओ बोल-भरोस द' देने रहैक—समयपर ल' आओत ओ।

बात मुँहसँ भरोस देबा ले' निकालि देने रहय कुमार, मुदा लक्ष्मी ओकरा गीरह बान्हि लेने छलीह। ओकर प्रत्येक पत्रमे समयक प्रतीक्षाक बात तँ अवस्स रहल करैक। कैक वर्ष भ' गेलैक ओकरा सभक एहि वात्तकि। कैक बेर भेटो-घाँट भेलैक—मोनक बात एक-दोसराकेँ कहने-सुनने रहय। आ तखन कुमारोकेँ लक्ष्मीक हेतु विचार भेल रहैक—घरमे रहने बेजाय नै। देखल जयतै….।

एम्हर निम्न सामाजिक वातावरणमे मनुक्ख जकाँ जीवाक कुमारक लालसा कुमारकेँ किछु बेसी उठापटक करबौलकैक। ओ व्यस्त होइत गेल। एतेक व्यस्त जे ओ अपन जिनगीक आगाँ सभ किछु बिसरि जयबा ले' बाध्य भ' गेल। एतेक धरि जे लक्ष्मीक पत्रक उत्तरो नहि देब' लागल ओ….।

नारीक प्रति ओकर धारणामे बरोबरि एक बात धरि थोपाइत रहलै—ओ पुरुषकेँ बरोबरि मूर्ख बनबैत रहलि अछि। एकटा आकर्षक झूठ‥ !

घरमे सभ किछु होइतो पारिवारिक सिनेहसँ उपजल व्यवस्थित बासक अभावक समस्या ओकरा यायावर बना देने रहैक। ओ बरोबरि छिछिआइत रहल। एहि क्रममे भेटल रहै कैक गोट सहयात्री, जे ओकर दर्दकेँ बूझि संग देबा ले' वचन देने रहैक। मुदा कालान्तरमे सभ धोखा द' देने रहैक।

से, एहने सन कोनो घटना कुमारकें कहियोकाल झकझोड़ि देल करै आ तखन लक्ष्मीक अनुहार नाचि जाइ ओकरा आगामे—ईहो तँ नारी आछ····!

फेर मोन पड़ै निर्बोध लक्ष्मीक निश्छल जिज्ञासासँ भरल नेत्र आ अनुनय—'हम अहीं संगे रहब·······।'

नहि लक्ष्मी, एहन नहि भ' सकैत अछि। लक्ष्मीक इएह पवित्रता तँ कुमारकें मोन बहटारने रहैक, जे बादमे बुझलकै ओ। आ तेँ चिट्ठीयोमे लिखि देने रहैक—समयक प्रतीक्षा अछि···।

समय बितैत गेलै—ओ व्यस्त होइत गेल। सांसारिक बाध्यताक हाथेँ ओ मजबूर भ' लक्ष्मीकें पत्र धरि लिखब छोड़ि देने रहय···। ओकरा बुझाइक, सामाजिक प्रतिष्ठा आ व्यक्तिगत सुविधाक लेल आब ओ एहिना रहत तँ नीक। लक्ष्मी कतहु जबूरा ने भ' जाइक ओकरा!

आ तखन लक्ष्मीक चिट्ठीकें पढ़ि चिर्री-चिर्रीक' फाड़ि फेंकि देबाक मोन होइक कुमारकें। कोनो नवीन गप पढ़बा लेल मोन तरसि गेलै ओकर—लक्ष्मीक पत्रमे।

टेप कयल वक्तव्य जकाँ लक्ष्मीक चिट्ठीमे एक्केटा बात लिखल रहैछ—'हम तंग छी। एहि नरकसँ अहींटा निकालि सकैत छी, नहि तँ हम तड़पिक' मरि जायब एत'···।'

'मरि जायब तँ हम की करू···?' कहियो काल कुमारकें खिसियाक' लीखि देबाक मोन होइक, मुदा··· फेर वएह निश्छल अनुनय—'हम अहीं संगे रहब···!' ओकरा आत्माकें झकझोड़ि दैक आ ओ पुनः बोल-भरोस लीखि देल करैक···। कुमार बुझैत अछि, लक्ष्मी निर्दोष अछि। ओ चाहियोक' किछुक' नहि सकत। बापक उदास-उदास अनुहार ओकरा अपन गलाक दर्दकें एखन धरि ढोयबापर बाध्य करैत रहैत छलैक। आ कुमारक संग रहबामे लक्ष्मीक ई दर्द बड़ पैघ बाधक रहलैक अछि। दर्द—सामाजिक मार्यादा, लक्ष्मीक उधियाइत भविष्यक आ रिटायर होइत जाइत प्रौढ़ बाप।

ओकर बाप···छओ-सात सयक नोकरीपर आठ-दस गोटेक परिवारकें शहर



मे पेट पोसनिहार एकटा क्लर्क। पारिवारिक अर्थ-तन्त्रक जालमे कुहरैत किरानीक दर्द भलेँ ओकर बेटी नहि बुझौक, कुमार खूबे बुझैत अछि।

जहियासँ बाहरी आमदनीबला टेबुलसँ ओकर बदली भ' गेलै, तहियासँ ओ पाइ-पाइक लेल मोहताज भ' गेल अछि। दू कौड़ी उपार्जन करबा लेल आफिसक समयक बादो ठीका-पट्टाक फेरमे 'साइट'पर दौड़ल फिरैत अछि। ओकर एहि छिछिऐनीक दर्दकें लक्ष्मीक माय नहि बूझि चालि-ढालि बिगड़ब कहैत छथि। बात-कहिनी कहैत छनि। आ तखन कुमार कएक बेर देखने रहय, लक्ष्मी मायक बात सूनि डबडबायल नोरकें आँखिक कोरमे जबर्दस्ती नुका, कएक सालक रंग उड़ल पेंट आ कुमारेक आनल विदेशी हाफशर्ट पहिरि घरसँ बाहर भ' जाइक—चुपचाप।

कुमारकें बुझाइक, एहि परिवारकें ओकर बेसी जरूरति छैक। आ ओ तखन सिलसिलाकें बनल रह' दैक। से आइ धरि, जखन ओ कनेक बिसरहु चाहैत अछि तँ किछुओ संस्मरणसँ रोमांचित भ' जाइत अछि—दूर, बहुत दूर, लक्ष्मीक अनुहार चमकि उठैत छैक ओकरा आगाँ····।

मेघ हड़हड़ाइत छैक। कुमारक तन्द्रा जेना एकाएक टूटैत छैक। ओह! ओ तँ अतीतमे चलि गेल छल···। पानि तँ अयबे करतै आब। आब ओ·······!

बीयाक भार कान्हपर लदने चलितरा खतबे कोलामे अबैत छैक। ज'नसभ खूजा बनाक' पाहिपर छीटि देबालै' कहैत छैक—जे जल्दी खेत उसरै। चलितरा खूजा पाहिपर छीटि लाठी लेने कुमारक बगलमे ठाढ़ भ' जाइत छैक।

'चलितरा?' कुमार टोकैत छैक।

'जी मालिक!' चलितरा नीचाँ तकैत बजैत अछि।

'बीया कतेक जोड़ा हेतौ रे?'

'एह, एखनू होतै मालिक! साँसे कित्ता देख लेतै।'

कुमार चुप्प भ' जाइत अछि। चलितरा बगलमे ठाढ़े रहैछ। कुमारकें बुझाइत छै जे कोनो काज होतै ओकरा हमरासँ।

पुछैत छैक—'की बात छै रे! जेबहि नहि बिराड़मे?'

'जयवै मालिक की !' कनेक चुप्पीक बाद—'कनीटा के काम रहलै !'

'की छौ ?'

'कनी रुपैया चाही मालिक !'—जेना कोनो अपराधक' रहल हो ।

'कैला रे, एखन तँ लोक बोनि कमाइत अछि, खाइत अछि । ओहूमे तो दुइए प्राणी····!'

'कहाँ दू प्राणी मालिक ! अखनू तँ असगरिए छिऐ । सगाइ करबै । बात पक्का भ' गेलै । ताही ला ·· ।'

'सगाइ ?' आश्चर्य होइत छैक कुमारकेँ—'तोरा तँ बियाह भेल रहौ रे ?'

'जी, भेल तँ रहै । बिलगा देलिऐ ।'

'कथीले' रे ! बड़े मानौ तोरा कहाँदन····!

'दुत्, की मानत मालिक । अपनेसँ कोन····। जहिया बियाह भेल रहय तहिये कहि देने रहिऐ—हमरा किछु नै है । मालिकमे कमाइ छी त खाइत छी । मालिके चारि कट्ठा जनौरी देने है—सेहे एकटा अन्नक आधार । तकरे उपजाक' साग-क'न खाइ छी । जेहे खाइ छी—सेहे खिअयबौ ।'

'तखन ?'

'तखनू तँ बात मानि गेल रहय मालिक । तोँ जहाँ रहब', तहीँ रहब । जे खिअयब', सेहे खायब'—कहने रहय । किछु दिन तँ ठीके रहलै । लेकिन····।'

'लेकिन की ?'

'जिउ के बड़ पातर रहै ऊ । जेहे दूटा नीक-नुकुत दै, तकरे ला बेहाल । नीक-नुकुत खाइमे बहादुर । खूब खाइ, खूब मोटाइ आ खूब ···।' चलितरा जेना अतीतमे भसिया जाइत अछि । मुँह तीत भ' गेलै ।

'तखन की भेलौ रे ?'—कुमारक जिज्ञासा बढ़ि जाइत छैक ।

'तखन की होतै मालिक । इज्जतोपर खेल गेल । भठि गेल ऊ । हम अपना आँखिसँ एक दिन बकरीबला घरमे ...कहल जाओ जे ओहन भरछूही के कोना रखितिऐ ?'—चलितराक ग'र मोटा जाइत छैक । ओ कुमारक स्वीकृति सुनबाले'



ओत' ठाढ़ नहि रहैत अछि । बिराड़ दिस पड़ायल चल जाइत अछि ।

कुमार हतप्रभ अछि···। पुनः एकबेर ओकरा मस्तिष्कमे नारीक चित्र नाचि उठैत छैक—आकर्षक झूठ । सोनाक मृगा जकाँ आकर्षक झूठ, जकरा पाछाँ नहियो चाहिक' लोककेँ जाय पड़ैत छैक । लोक जाइत रहल अछि आ पछताइत रहल अछि ।

मेघक बुन्न झहर' लगैत छैक । कुमार छाताकेँ खोलि लैत अछि । बड़का-बड़का बुन्न छातापर खस' लागल छैक—ढब-ढब, ढब·· ।

जनो सभक गीतक बोलमे आर मिठास भरि जाइत छैक :

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा
बड़ सुख होयतै—
हथिया चढ़ि घुमबै जहान रे····।

ओकरा बुझाइत छैक—लक्ष्मी जनि सभक मध्य ठाढ़ भ' गेलीह अछि । आ ओकरा सभक स्वरक संग स्वर मिला कुमारकेँ पुनः एकबेर निश्छल अनुनय करैत छैक—"तोरा संगे जयबौ रे कुजबा !"

कुमार तिलमिला जाइत अछि । ओ नीक जकाँ जनैत अछि । लोकनायकक मजबूरी' जे प्रियतमाक अनुनयकेँ अन्तमे स्वीकारबापर बाध्य होइत रहल-ए ।

आ ओ अपनाकेँ आड़िपर बैसल 'कुजबा' बूझ' लागल अछि ।



# मैथिली अकादमी, पटना

## किछु महत्त्वपूर्ण नाटक

| क्रम सं० पोथीक नाम | लेखक/अनुवादक/संपादक | अजिल्द/सजिल्द |
|---|---|---|
| १. मणिमंजरी | डा० चन्द्रधर झा (संपादक) | ८·५०/१०·५० |
| २. उत्तर रामचरित | मुन्शी रघुनन्दन दास (अनुवादक) | ६·००/८·०० |
| ३. झुमकी | मणिपद्म | [illegible]·००/— |
| ४. सावित्री-सत्यवान | महाकवि लाल दास | ६·००/८·०० |
| ५. पहिल सांझ | सुधांशु 'शेखर' चौधरी | ६·००/८·५० |
| ६ वरदान | गौरीकान्त चौधरी 'कांत' | ५·००/— |
| ७. चरैवति | सोमदेव | १०·००/१२.५० |
| ८. दिग्विजय | काशीनाथ मिश्र | ५·००/— |
| ९. पारिजातहरण | उमापति | ५·५०/— |

आवरण मुद्रक—मुरलीधर प्रे